प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण

(तीसरा खण्ड)

सम्पादक

आचार्य नलिनविलोचन शर्मा

शोध-सहायक

श्रीरामनारायण शास्त्री

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

पटना

प्रकाशक
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
सम्मेलन-भवन, पटना-३

प्रथम संस्करण; वि० सं० २०१६; सन् १९५९ ई०

मूल्य · १.२५ न० पै०

मुद्रक
नागरी-प्रकाशन (प्राइवेट) लि०
द्वारा युगान्तर प्रेस, पटना-४

वक्तव्य

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थशोध विभाग से पुरानी पोथियों के दो विवरण पुस्तकाकार में पहले प्रकाशित हो चुके हैं। उन दो खण्डों में से पहले खण्ड में परिषद्-संग्रहालय में संचित पोथियों का विवरणात्मक परिचय है और दूसरे खण्ड में श्रीमन्नूलाल पुस्तकालय (गया) तथा पटना-सिटी (गायघाट) के श्रीचैतन्य पुस्तकालय की पोथियों के विवरण प्रकाशित हैं। पहले खण्ड का तो संशोधित और संवर्द्धित नवीन संस्करण भी निकल चुका है। इस तीसरे खण्ड में तीस ग्रन्थकारों के पचास ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। ये पचासों ग्रन्थ केवल हिन्दी के ही हैं और ग्रन्थकारों में भी आठ बिहार के हैं। ये सभी ग्रन्थ परिषद् के संग्रहालय में सुरक्षित हैं। सबसे बढ़कर महत्त्व की बात यह है कि इस विवरण में पाँच ग्रन्थकार बिलकुल नये हैं, जिनका पता अबतक के प्रकाशित किसी शोध-विवरण में नहीं है। ये हिन्दी-संसार के लिए सर्वथा नवीन हैं। पुस्तक के आरम्भ में सभी ग्रन्थकारों का संक्षिप्त परिचय भी दे दिया गया है। अन्त में तीन परिशिष्ट भी हैं, जिनमें शोधकर्त्ताओं की सुविधा के लिए आवश्यक विश्लेषणात्मक विवरण सुलभ हैं।

इस विवरण के प्रारम्भिक बत्तीस पृष्ठों की सामग्री का सम्पादन प्राचीन ग्रन्थ-शोध विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष डॉक्टर धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री ने किया था और उसके आगे के पृष्ठों की सामग्री तथा आरम्भ में प्रकाशित ग्रन्थकार-परिचय इस विभाग के वर्त्तमान अध्यक्ष आचार्य नलिनविलोचन शर्मा द्वारा सम्पादित हैं।

पुस्तक में प्रकाशित विवरणों के तैयार करने में विभागीय अनुसन्धायक श्रीरामनारायण शास्त्री ने बड़ा परिश्रम किया है। उनके द्वारा विभागीय संग्रहालय के जो विवरण तैयार होकर प्रकाशित हुए हैं, उनकी उपयोगिता हिन्दी-जगत् के शोधकर्त्ता विद्वानों ने स्वीकार की है। आशा है कि यह तीसरा खण्ड भी पिछले खण्डों के समान ही शोध-कार्य में उपयोगी होगा।

प्रस्तुत पुस्तक में जिन पोथियों का परिचय दिया है, उनकी प्राप्ति में जो सज्जन सहायक हुए हैं, सबके प्रति हम आभार प्रकट करते हैं। उनके नाम और पते यथास्थान पुस्तक में अङ्कित हैं। विश्वास है कि इस विभाग के अनुसन्धायक श्रीरामनारायण शास्त्री जब कभी ग्रन्थ-शोध के लिए बिहार-राज्य में निकलेंगे, उन्हें पुरानी पोथियों के अधिकारियों से यथोचित सहायता प्राप्त होगी। यदि पोथियों के संग्रह में श्रीशास्त्री को सहयोग मिलता रहा, तो भविष्य में परम उपादेय विवरणों के प्रकाशित होने से साहित्यिक शोध में विशेष लाभ की सम्भावना है।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
शकाब्द १८८१

शिवपूजनसहाय
संचालक

सम्पादकीय निवेदन

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थशोध-विभाग की ओर से १९५१ ई० के फरवरी मास से ही प्राचीन पोथियों के संग्रह तथा उनके शोध-मूलक विवरण प्रकाशन का कार्य हो रहा है। १९५८ ई० के मार्च तक १२७१ प्राचीन हस्तलिखित पोथियाँ संगृहीत हो चुकी हैं। इन पोथियों में से १५१ (हिन्दी १००+संस्कृत ५१) के विवरण तथा उनके रचयिताओं के संक्षिप्त परिचय (प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण पहला खण्ड) प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त मन्नूलाल पुस्तकालय, गया और वैकुण्ठ पुस्तकालय, गायघाट, पटना-सिटी के १२७ ग्रन्थों के विवरण तथा ग्रन्थकारों के परिचय दूसरे खण्ड में छप चुके हैं। परिषद् में संगृहीत ५० हिन्दी हस्तलिखित पोथियों के विवरण का यह तीसरा खण्ड अनुसन्धित्सु विद्वज्जनों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हम प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं। इसकी ग्रन्थ-संख्या पहले खण्ड की ग्रन्थ-संख्या (१००) के बाद से (१०१ से) है।

प्रस्तुत शोध-विवरण में तीस ग्रन्थकारों के पचास ग्रन्थों के विवरण दिये जा रहे हैं। इन ग्रन्थकारों में आठ बिहार राज्यवर्त्ती ग्रन्थकार निश्चित रूप से अनुमेय हैं और पाँच ग्रन्थकारों की चर्चा प्रथम प्रथम इस विवरण-ग्रन्थ में हो रही है।

अधोलिखित तालिका से विक्रम-शताब्दी के अनुसार रचित और लिपिबद्ध ग्रन्थों की संख्या की जानकारी होगी।

विक्रम-शताब्दी के अनुसार ग्रन्थों के रचनाकाल और लिपिकाल

शताब्दी	इस शताब्दी में रचित पोथियों की संख्या	इस शताब्दी में लिपिबद्ध पोथियों की संख्या
सोलहवीं	×	×
सत्रहवीं	१	×
अठारहवीं	२	×
उन्नीसवीं	३	११
बीसवीं	२	१७

इस अनुसन्धान मे निम्नलिखित आठ विहारी कवियो के हस्तलेख मिले हैं—

घनारग, दरियादास, परमानन्ददास, प्रेमदास, बच्चू मल्लिक, लक्ष्मीसखी, सूरजदास तथा हलधरदास। जिन नये ग्रन्थकारो के हस्तलेख पहली बार परिषद् के शोध के फलस्वरूप प्राप्त हुए हैं, वे इस प्रकार हैं—घनारग, नरहर, बच्चू मल्लिक, मानप्रवत, लक्ष्मीसखी, श्रवणदेव और सत्यभोलास्वामी।

इनके सम्बन्ध मे सक्षिप्त परिचयात्मक टिप्पणियाँ ग्रन्थ-विवरण के प्रारम्भ मे दे दी गई हैं। परिषद् मे सकलित ४१९ हिन्दी हस्तलिखित प्राचीन ग्रन्थो के सक्षिप्त विवरण भी चौथे खण्ड के रूप मे शीघ्र प्रकाशित होंगे। हम उन महानुभावो के कृतज्ञ हैं, जिन्होने परिषद्-सग्रहालय को हस्तलिखित पोथियाँ प्रदान करने की उदारता दिखाई है।

श्रावणी-पूर्णिमा
स० २०१६ वि०

नलिनविलोचन शर्मा
अध्यक्ष
प्राचीन हस्तलिखित-ग्रन्थ-शोध-विभाग

विषयानुक्रम

संकेत-विवरण

पृ० सं० —पृष्ठ-संख्या
प्र० पृ० पं० —प्रति पृष्ठ पंक्तियाँ
दे० —देखिए
खो० वि० —खोज-विवरण
ना० प्र० स० का० —नागरी-प्रचारिणी-सभा, काशी
वि० सं० —विक्रम-संवत्
बि० रा० भा० प०—बिहार-राष्ट्रभाषा परिषद्
मि० बं० वि० —मिश्रबन्धु-विनोद
र० का० —रचनाकाल
लि० का० —लिपिकार या लिपिकाल
ग्र० सं० —ग्रन्थ-संख्या
क० सं० —कवि-संख्या
१ खं० —पहला खण्ड
२ खं० —दूसरा खण्ड
३ खं० —तीसरा खण्ड

ग्रन्थकारों का संक्षिप्त परिचय

[ग्रन्थकारों के नामों के सामने अङ्कित कोष्ठकान्तर्गत संख्याएँ विवरणिका में सम्मिलित ग्रन्थों की क्रम-संख्याएँ हैं।]

१ कबीरदास (१४१) निर्गुण सम्प्रदाय के प्रसिद्ध सन्त कवि; कबीरपन्थ के प्रवर्त्तक अनुमानतः १४५५ वि० में जन्म और १५०५ वि० में निर्वाण रामानन्द के शिष्य और धर्मदास के गुरु। इस विवरण में उपलब्ध 'पंचमुद्रा' ग्रन्थ विभाग की खोज में नवीन है। इस ग्रन्थ की एक प्रति काशी नागरी प्रचारिणी सभा को खोज में मिल चुकी है[1] जिसका लिपिकाल १७४० वि० है। परिषद्-संग्रहालय में कवि की अन्य छः रचनाएँ हैं।[2] नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को कवि की लगभग पचहत्तर रचनाएँ प्राप्त हुई हैं।[3]

२ कृष्णदास—(१०६) दानलीला के रचयिता पयहारी उपनाम से प्रसिद्ध, अट्ठारहवीं सदी में वर्तमान। यह हस्तलेख नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को भी खोज में मिला है।

३ कृपाराम—(११५) रामानुज-सम्प्रदाय के भक्त कवि १८५५ वि० के लगभग वर्तमान। इनके सम्बन्ध में परिषद् के पिछले 'प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण' (पहला खण्ड) में चर्चा हो चुकी है। दे० पृ० सं० ८। इनकी चार रचनाएँ नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को खोज में मिली हैं।[4]

४ कृपानसिंह—(११६) भावाँको (उत्तरप्रदेश)-जिला निवासी, १९७७ वि० के लगभग वर्तमान। परिषद् के पूर्व प्रकाशित विवरण में इनकी विशेष चर्चा हुई है।

---

१ नागरी प्रचारिणी सभा (काशी) का खोज विवरण—१९१५-२० पृ० सं० ४६ पद्य।

२ प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण—पहला खण्ड (बि० रा० भा० प० पटना १९५८ ई०)—पृ० क्र० सं० २१ क, २० ११ क ८४।

३ हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण—पहला खण्ड पृ० सं० १८।
हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों का त्रयोदश त्रैवार्षिक विवरण (१९२६-२८ ई०) पृ० सं० ५१।
" " चतुर्दश " " (१९२९-३१ ई०) " ५५।
" " पञ्चदश " " (१९३२-३४ ई०) " ४१।
" " षोडश " " (१९३५-३७ ई०) " ३५।
" " सप्तदश " " (१९३८-४० ई०) " ५०।

४ हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण, पृ० सं० २९।

दे० वि० रा० भा० प० से प्रकाशित (१९५८ ई०) प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण (पहला खण्ड, पृ० द, क्र० सं० २६ और ग्र० स० १६ ख।

५ गुरुप्रसाद – (१२८) 'रत्नसागर' के रचयिता गुरुप्रसाद परिषद् के शोध में नये हैं ! इनका रचनाकाल सम्भवतः १७५५ वि० है। 'याज्ञवल्क्यस्मृति भाषा' के ग्रन्थकार गुरुप्रसाद से ये भिन्न हैं। नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को भी इनकी रचनाएँ खोज में मिली हैं। दे० इस खोज-विवरण में ग्र० सं० १२८ की टिप्पणी।

६. घनारंग –(१४४) शाहाबाद (बिहार) जिला के घनगाई ग्राम-निवासी, डुमरांव-राज्य के आश्रित, कवि और संगीतज्ञ, अट्ठारहवीं शती में वर्त्तमान, परिषद् के शोध में नये मिले हैं।

७ चरणदास—(११४, १३३) दहरा (अलवर-राजस्थान -निवासी, धूसर बनिया, सुखदेव के शिष्य और सहजोबाई के गुरु; चरणदासी सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक, इनका प्रथम नाम रणजित था। परिषद् के खोज-विवरण में पहले भी इनकी चर्चा हुई है।[1]

८ जनभुआलस्वामी—(१३७) भगवद्गीता के दोहे-चौपाइयों में रूपान्तरकार, भुआल, भुआलस्वामी और जनभुआल नाम से अभिहित, १७०० वि० में वर्त्तमान। इनकी चर्चा मिश्रबन्धु-विनोद[2], नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) की खोज-रिपोर्ट[3] और परिषद् के खोज-विवरण[4] में हो चुकी है।

९ तुलसीदास—(१०४, १०७, ११८, १२१, १२७, १२६, १३०, १३८, १३६, १४३, १४७, १५०) प्रस्तुत विवरण में प्रसिद्ध संत-कवि गो० तुलसीदास के ग्रन्थों की बारह पाण्डुलिपियाँ खोज में उपलब्ध हुई हैं, जिनका विवरण इस प्रकार है—

क्र० सं०	ग्रन्थ-नाम	प्रतियाँ	लिपिकाल
१	रामचरितमानस	७	१८५८ वि०, १८७१ वि०, १८८७ ई०, १६१७ वि०
२	छप्पै रामायण	२	
३	भरथमिलाप	२	१८५७ वि०, १६०७ ई०
४.	कवितावली	१	

१० दरियादास—(१३५, १४५ क, १४५ ख) शाहाबाद (बिहार) के धरकंधा-ग्राम-निवासी, पीरनशाह के पुत्र; दरिया-पंथ के प्रवर्त्तक सन्त कवि, जन्म स० १७३१ वि०

---

१ बि० रा० भा० प० (पटना) से प्रकाशित (१९५८ ई०, द्वितीय संस्करण), प्रा० ह० पो० का विवरण—पृ० सं० ८, क्र० सं० ११ और ग्र० सं० ६६।

२. मिश्रबन्धु विनोद (गंगा-ग्रन्थागार, लखनऊ, पचम संस्करण, २०१३ वि०), पृ० ८८, क्र० सं० २५।

३ खो० वि० (ना० प्र० स०, का०) १६०६—११, ग्र० सं० १३२।

४ प्रा० ह० लि० पो० का वि० (पहला खड) दूसरा संस्करण, १९५८ ई०, पृ० ड, क्र० सं० २१, ग्र० सं० ६७।

और निर्वाण सं० १८१७ वि०। इस विवरण में इनके तीन ग्रन्थों का उल्लेख है। परिषद् (बि० रा० भा० प०, पटना) से प्रकाशित खोज विवरण (प्रथम खण्ड, द्वितीय संस्करण, १९५८ ई०) में सत्तावन पाण्डुलिपियों के विवरण दिये गये हैं।[1]

११ नरहर— १४९) परिषद् की खोज में नये मिले कवि हैं।

१२. नंददास—(१२१ १११) गोस्वामी तुलसीदास के समुख (? ; अष्टछाप के कवियों में प्रमुख ; स्वामी विट्ठलदास के शिष्य , १६२४ वि० के लगभग वर्त्तमान। इनके रचे हुए पन्द्रह ग्रन्थ अबतक खोज में मिले हैं।[2] नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) और परिषद् (बि० रा० भा० प० पटना) के पिछले खोज-विवरणों में इनकी रचनाओं के उल्लेख हैं।[3] इस विवरण में दो पाण्डुलिपियों के उल्लेख हैं।

१३ परमानंददास—(११२) शाहाबाद जिला (बिहार-राज्य) के कोरी ग्राम-वासी कवि ; १८९१ वि० = १७९८ ई० के लगभग वर्तमान। परिषद् के पूर्वप्रकाशित खोज विवरण में भी इनका ग्रन्थ उल्लिखित हो चुका है।[4]

१४ प्रेमदास—(१०९) मुजफ्फरपुर (बिहार-राज्य के हाजीपुर निवासी बड़ागाँव (गोरखपुर उत्तरप्रदेश) में जन्म; नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) की खोज में तीन निम्नलिखित प्रेमदास मिले हैं —

(क) प्रेमदास - १८२७ वि० के लगभग वर्त्तमान ; जाति के अग्रवाल वैश्य अवधपगढ़-निवासी प्रेमसागर, नासकेत की कथा, पंचरंग, गैदलीला और भक्तिमालीला के रचयिता।[5]

(ख) प्रेमदास – १७९१ वि० के लगभग वर्त्तमान ; हितहरिवंश के शिष्य ; 'हितहरिवंश चौरासी' के टीकाकार।[6]

(ग) प्रेमदास—स्वामी रामानुज के अनुयायी ; प्रेम-परिचय विहारिनलीला, भगवतविहारलीला के रचयिता।[7] जैमिनीपुराण के हिन्दी-अनुवादकर्त्ता संभवतः प्रस्तुत ग्रन्थकार।[8]

१५ बख्श मल्लिक— १२६) शाहाबाद जिला (बिहार-राज्य) के डुमराँव राज्य के आश्रित संगीतज्ञ कवि कविवर बनारंग के समकालीन और उनके भ्रातृज १९वीं शती में वर्त्तमान।

---

१ प्रा० ह० लि० पो० का वि०—प्रथम खंड (बि० रा० भा० प० पटना) दूसरा संस्करण (१९५८ ई०)—ग्र० सं० ९ और ग्र० सं० ११, ११ ७७—११४।

२. प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण—प्रथम खण्ड (बि० रा० भा० प० पटना से प्रकाशित १९५८ ई० दूसरा संस्करण) पृ० सं० ८, ग्र० सं० १२।

३ क्रमशः।

४ प्रा० ह० पो० का विवरण—पहला खण्ड (बि० रा० भा० प०, पटना से १९५८ ई० में प्रकाशित, दूसरा संस्करण), पृ० सं० ८, ग्र० सं० १८ पृ० सं० ६१।

५ ना० प्र० स० का खो० वि० १९०९—११ ग्र० सं० ११६, बी० सी० डी०।

६. वही ग्र० सं० २ १६ बी।

७. ना० प्र० स० का० खो० वि० १९०६-११ ई० ग्र० सं० २४६ ए, बी, सी।

८ वही, १९२६—२८ ई० ग्र० सं० ३३६, पृ० सं० ७८ और ३३१।

१६ मनोहरलाल (११७) परिषद् के शोध में मिले नये कवि; १७२४ वि० के लगभग वर्त्तमान, नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) के खोज-विवरणों में तीन मनोहरदास की चर्चा हुई है।[१] विशेष विवरण इस विवरण की ग्रन्थ संख्या ११७ और पृ०सं० ३७ में दिया गया है, जो द्रष्टव्य है।

१७. मुकुन्ददास (१४२) शाहजादा सलीम (जहाँगीर) के आश्रित, १६७२ वि० के लगभग वर्त्तमान। मिश्रबन्धु-विनोद (गंगा-ग्रन्थागार, लखनऊ, पंचम संस्करण, २०१३ वि०, पृ०सं० ३३५, क० सं० ३८२) और नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) के खोज-विवरण १६०६-११, ग्र० सं० १८३ ए और बी, १६३५-३७, पृ० ३६, क० सं० ६५) में भी इनका उल्लेख हुआ है।

१८. मानप्रवत—(१४८) नवोपलब्ध ग्रन्थकार, रचनाकाल अज्ञात; अन्य खोज विवरणिकाओं में अनुल्लिखित

१६. राममखे—(११६) जयपुर में जन्म, अयोध्या और चित्रकूट में साधु-जीवन-कालीन निवास, १८०४ वि० के लगभग वर्त्तमान, १३ ग्रन्थों के रचयिता। इनके ग्रन्थों की पाण्डुलिपियाँ ना० प्र० स० का० को भी खोज में मिली हैं।[२] सम्भवत, ये मध्वाचार्य के वंशज थे।[३] इनकी दस रचनाएँ मिलती हैं। अन्य मत से ये अट्ठारहवीं शती के मध्य में हुए थे।[४]

२०. लक्ष्मीसखी—(१२२) सारन जिला (विहार-राज्य) के अमनौर-ग्राम-निवासी, १६७० वि० में वर्त्तमान, सखी-मत के प्रवर्त्तक, सरभंग-मत ज्ञानीबाबा के शिष्य और सखीमत के आचार्य कामतासखी के गुरु। छपरा-कचहरी और टेरुआ (सारन) में इनके प्रसिद्ध मठ हैं। प्रारम्भ में कबीरपंथी साधु। 'भोजपुरी'-प्रधान पाँच ग्रन्थ इन्होंने रचे हैं—अमरफरास, अमरसीढ़ी, अमरराग, अमरकहानी और अमरविलास।

२१ ललितकिशोरी—(१२५) परिषद् के शोध में नवोपलब्ध, १६२५ वि० में वर्त्तमान, वृन्दावन में 'शाहजी का मन्दिर' के निर्माता।[५] नागरी-प्रचारणी सभा (काशी) की खोज में बीसवीं शताब्दी में वर्त्तमान। लखनऊ-निवासी शाह कुन्दनलाल उपनाम से ख्यात और भी एक इस नाम के ग्रन्थकार हो चुके हैं,[६] जो स्वामी हरिदास की शिष्य-परम्परा में हैं। १७३३ वि० में इस नाम के वृन्दावन के एक महन्थ ग्रन्थकार हो चुके हैं।[७]

---

१ हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण (पहला भाग), १६८०, पृ० ११६।

२ ना० प्र० स० का० खो० वि० १६०५, ग्रं० सं० ७८, ७६, ८०, ८१, ८२।
„ „ १६०६-८ „ २१६ ए, बी, सी।
„ „ १६०६-११ „ २५७ ए, बी।

३ „ „ १६१७-१६ „ १५८ ए, बी, सी, डी, ई, एफ्।

४ „ „ १६२०-२२ „ १५८ ए, बी।
„ „ १६२६-२८ „ ३६५।

५. ना०प्र०स० का० खो०वि० १६२६-३१, ग्र०सं० १८८, खो०वि० १६३२-३४, ग्र०सं० १३४।

६ ना०प्र०स० का० खो०वि० १६०६-११ (परिशिष्ट-१) ३१।

७ ना०प्र०स० का० खो०वि० १६२३-२५, ग्र०सं० २४६, खो०वि० १६१२-१४, ग्र०सं० १०३।

२२ लल्लूलाल—(१११) आगरा-निवासी; उपनाम—लालकवि, जाति के गुजराती ब्राह्मण; कासिम अली के समकालीन १८७५ वि० के लगभग वर्तमान कलकत्ता के फोर्ट विलियम कॉलेज में हिन्दी के अध्यापक नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को इनकी पाँच रचनाएँ खोज में मिली हैं।[1]

२३ भगवानदास—परिषद् के खोज में नये मिले हैं; उत्तरप्रदेशीय गोंडा जिला के मनकापुर स्टेशन के निकटस्थ नैनकोली ग्राम में स्थित श्रीजानकीपुर आश्रम से इनका संस्थापक-सम्बन्ध रहा है। इनका रचनाकाल सम्भवतः १८७५ वि० है। इसी विवरण के १०१, १०१ क, १०१ ख और १०२ संख्यक ग्रन्थों की टिप्पणियाँ विशेष द्रष्टव्य हैं।

२४ भगवानस्वामी—(१०१, १०१ क १०१ ख) खोज में नवोपलब्ध कवि गोंडा (उत्तरप्रदेश) के मनकापुर-निकटवर्ती नैनकोली ग्राम-निवासी श्रीजानकीपुर आश्रम के आचार्य संभवतः उन्नीसवीं शती के अन्त में वर्तमान। इनकी तीन रचनाओं की पाण्डुलिपियाँ मिली हैं।

२५ सबलसिंह चौहान (१३४) इटावा के निकटस्थ किसी ग्राम के निवासी १७२७ वि० के लगभग वर्तमान; जाति के क्षत्रिय चौहान दोहे-चौपाइयों में महाभारत के रूपान्तरकार। श्रीरामनरेश त्रिपाठी के मतानुसार इनका 'जन्म संवत् १७०० के लगभग और निधन संवत् १७९२ के लगभग अनुमान किया जाता है।'[2] भीष्म पर्व की रचना १७१८ वि० में और स्वर्गारोहण पर्व की १७८१ वि० में। महाभारत के अतिरिक्त इनके लिखे हुए रूपविलासपिंगल, षट्ऋतु बरवै और भाषा ज्ञानसंहार भी कहे जाते हैं।[3] सरोजकार के मत से इनका जन्म १६७० ई० = १७२७ वि० में हुआ था।[4] ग्रियर्सन ने इन्हें चन्दागढ़ और सबलगढ़ का राजा बताया है।[5] किशोरीलाल गुप्त ने सबलसिंह का रचनाकाल १७१२ वि० से १७८१ वि० के बीच माना है तथा षट्ऋतु और भाषा ज्ञानसंहार को एक ही ग्रन्थ कहा है।[6] नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को भी खोज में इनकी रचनाएँ मिली हैं।[7]

---

१. ना० प्र० स० खो० रि० १९०६–८ सं० १९२ ए बी; खो० वि० १९०९–११ सं० १७१ १७४ १७५ बी; खो० वि० १९२६–२८ सं० २६६ ए बी, सी डी, खो० वि० १९२९–३१ सं० २१२ ए, बी सी।
२. कविता-कौमुदी (प्रथम भाग, नवनीत प्रकाशन बम्बई, आठवाँ संस्करण) पृ० सं० ४३३।
३ वही।
४ शिवसिंह-सरोज पृ० सं० ३३२, ३३३।
५-६. हिन्दी-साहित्य का प्रथम इतिहास—(द मॉडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान का किशोरीलाल गुप्त कृत हिन्दी अनुवाद) किशोरीलाल गुप्त—पृ० सं० ३८ क्र० सं० २१०।
७ ना० प्र० स० खो० रि० १९०४ प्र० सं० ११, खो० वि० १९०६–८ प्र० सं० २२४ ए और बी खो० वि० १९२३–२५, प्र० सं० ३९० ए बी खो० वि० १९२६–२८ प्र० सं० ४३२ और पृ० सं० ७०।

२६. सूरजदास—(११५) 'रामजन्म' के रचयिता, बिहार-निवासी कवि, इनकी चर्चा परिषद् से प्रकाशित ग्रन्थ खोज-विवरणों में हो चुकी है।[1] नागरी-प्रचारणी सभा (काशी) को भी शोध में इनके हस्तलेख मिले हैं।[2] रामजन्म के आठ हस्तलेख परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित हैं।

२७. सूरत—(१३२) शोध में नवोपलब्ध; पजाब-निवासी, कवि संतसिंह के पिता, १८८१ वि० के पूर्व मुहम्मदशाह के राजत्व-काल में वर्त्तमान, जयपुर-नरेश जैसिंह सवाई के समकालीन। इनकी चर्चा गार्सां द तासी[3] और नागरी-प्रचारणी सभा (काशी) के खोज-विवरणों[4] में भी हुई है।

२८. सूरदास—(११०, १२४) प्रसिद्ध कवि, वल्लभ-सम्प्रदाय के वैष्णव भक्त और अष्टछाप के कवियों में प्रमुख, १५४० वि० और १६२० वि० के बीच वर्त्तमान; जाति के ब्राह्मण, व्रज-निवासी, यह हस्तलेख नागरी-प्रचारिणी सभा[5] (काशी) को भी खोज में मिला है। बि० रा० भा० प० (पटना) मे प्रकाशित खोज-विवरणों[6] में इनकी चर्चा हो चुकी है। इस विवरण-ग्रन्थ में इनके ग्रन्थ की दो प्रतियों का उल्लेख है। इनके रचित निम्नलिखित ग्रन्थ अबतक खोज में प्राप्त हुए हैं—

क्रम-स०	ग्रन्थ-नाम	प्रतियाँ	लिपिकाल	खो० वि०
१.	सूरसागर	२५	१७९२ वि०, १७९७ वि०, १७९८ वि०, १८१० वि०, १८२५ वि०, १८२७ वि०, १८५३ वि०, १८६६ वि०, १८७३ वि०, १८७६ वि०, १८९२ वि०, १९१३ वि०, १९२४ वि०, १७६३ ई०	ना० प्र० स०, खो० वि० १९०१ ग्र० सं० २३, १९०४ ग्र० सं० १४२, १९०६-९ ग्र० स० २४४ सी, १९१७-१९ ग्र० स० १८६ बी, सी, डी, १९२६-२८ ग्र० स० ४७१, १९२९-३१, ग्र० स० ३१९ ए, बी, १९३२-३४,

---

[1] वि० रा० भा० प० से प्रकाशित प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण (पहला खण्ड), क० सं० २८, ग्रं० सं० १६ क और पृ० ख तथा १६, प्रा० ह० पो० का विवरण (दूसरा खण्ड), क० सं० ४१, ग्रं० सं० ४७ और पृ० ढ तथा ५३।

[2] ना० प्र० स० का० खो०वि० १९२३-२५, ग्रं० सं० ४१७, खो०वि०१९२६-२८, ग्रं० सं० ४७३ बी।

[3] हिंदुई साहित्य का इतिहास (मूल पुस्तक, इस्तवार दल लितरेत्यूर ऐंदुई ऐ ऐंदुस्तानी, गार्सां द तासी, अनु० डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, पृ० स० ३१८, क० सं० ३३७, प्रथम संस्करण, १९५३ ई०, हिन्दुस्तानी एकेडमी, उत्तरप्रदेश, इलाहाबाद)।

[4] ना० प्र० स० का० खो० वि० १९०४, ग्रं० सं० ७८, खो० वि० १९०९-११, ग्रं० सं० २८२।

[5-6] ना० प्र० स० का० खो० वि० १९०१, ग्रं० सं० २३, खो० वि०, १९०४, ग्रं० सं० १४२, खो० वि० १९०६-१९०८, ग्रं० सं० २४४ सी, खो० वि० १९२६-२८, ग्रं० सं० ४७१।

क्रम-सं०	ग्रन्थ-नाम	प्रतियाँ	लिपिकाल	खो० वि०
				प्र० सं० २१२ एच, थर्ड १९२३ २५, प्र० सं० ४१६ एफ़ जी एच आई, जे बि० रा० भा० प० (पटना) १ खं० प्र० स० ४३, बि० रा० भा० प० (पटना) २ खं० प्र० सं० ११, ८०
२	सूरसागर-सार	१		१९०९-११, प्र० स० ३११
३	दशमस्कंधटीका	८	१७४१ वि० १९१७ वि०	१९०६-८, प्र० सं २४४ बी १९१७-१९, प्र०सं० १८६ ए, १९२९ ३१ प्र० स० ३११ १९३२-३४ प्र० स० २१२ सी
४	नागलीला	१	१८७७ वि०	१९०६-८, प्र० सं० २४४ ई
५	पद-संग्रह	२	१९९७ वि०	१९०२, प्र० स० २१२ १९०६-८ प्र०सं० २४४ बी
६	ब्याहलो	१		१९०६-८ प्र० सं० २४४ ए
७	गोवर्धनलीला बड़ी	१		१९१७-१९ प्र० सं० १८६ ई
८	प्राणप्यारी	१		१९१७-१९ प्र०स० १८६ एफ़
९	भ्रमर-गीत	२	१८९९ वि०	१९२३ २५ प्र०सं० ४१६ ए बी
१०	कवित्त	१		१९२३-२५ प्र० सं० ४१६ सी
११	सूरदास के विष्णुपद	१	१९०४ वि०	१९२३-२५, प्र० स० ४१६ डी
१२	रुक्मिणी-विवाह	१		१९२३ २५ प्र सं० ४१६ ई
१३	सुदामा-चरित्र	१		
१४	सूररत्न	१	१८७४ वि०	१९२९ ३१ प्र० सं० ३११ सी
१५	राममाला	१		१९२९ ३१ प्र०सं० ३११ डी
१६	बिसाहनलीला	२	१८३१ वि०	१९२९ ३१ प्र० सं० ३११ ई
१७	बंसीलीला	१		१९३२ ३४ प्र०सं० २१२ डी ई
१८	पद-संग्रह	५		१९३२ ३४ प्र० सं० २१२ ई एफ़ जी
१९	बारहमासा	१		१९३२ ३४, प्र० सं० २१२ जी

क्रम-सं०	ग्रन्थ-नाम	प्रतियाँ	लिपिकाल	खो० वि०
२०.	बारहखड़ी	१		१९३२-३४, ग्र० सं० २१२ ए
२१.	द्रौपदी के भजन	१		१९३२-३४, ग्र० सं० २१२ डी
२२.	विनयपत्रिका	२		वि० रा० भा० प० (पटना) २ खं०, ग्र० सं० ६३, १००

२९. हरिवल्लभस्वामी—(१०३) १७०१ वि० के लगभग वर्त्तमान, जाति के ब्राह्मण। इनका सविस्तर परिचय नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) के खोज-विवरण (१९२६-२८ ई०) में सविस्तर दिया गया है।[१] इनकी तीन रचनाएँ खोज में मिली हैं।[२]

३० हलधरदास—(१४६) मुजफ्फरपुर (बिहार-राज्य) जिला के निवासी, १९वीं शती के प्रारम्भ में वर्त्तमान। इनके हस्तलेखों में उद्धृत रचनाकाल-बोधक पद १८०० वि० भी इनका स्थितिकाल व्यक्त करता है, किन्तु वह सन्दिग्ध भी हो सकता है। यथा—'ब्रह्म सहस रस वेनि सत कुसुमाकर सुदि पंचदश' इससे एक हजार और रस—६+ वेनि–२ = ८ सौ, अर्थात् १८०० संवत् हो जाता है। कवि के सम्बन्ध में अभी तक पर्याप्त अनुसन्धान नहीं हुआ है। नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को भी यह हस्तलेख खोज में मिला है।[३] परिषद् से प्रकाशित विवरण-ग्रन्थ में इनकी चर्चा हो चुकी है।[४]

---

१ ना० प्र० स० का० खो० वि० १९२६–२८, ग्रं०-सं० १७३, पृ० सं० ४४ और २६५, २६६।

२ ना० प्र० स० का० खो० वि० १९१७–१९, पृ०-सं० १४, १९०१—संगीतमाला और १९२३-२५—संगीतदर्पण।

३ ना० प्र० स० का० खो० वि० १९०६–८, ग्रं० सं० ५६, खो० वि० १९२६–२८, ग्रं० सं० १६३।

४. बि० रा० भा० प० (पटना) २ खं०, ग्रं० सं० २५।

हस्त-लिखित प्राचीन पोथियों का संग्रह विवरण पत्र *

१०१—राजनीति शाव वचन—ग्रंथकार—श्री सत्य मोकास्वामी। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन देशी कागज, पूर्ण। पृष्ठ-सं०-७४। प्र० पृ० पं० लगभग—२४। आकार—८"×६"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारंभ—"श्री गणेशाय नमः श्री गुरुभ्यो नमः श्री रंगराज गुरुभ्यो नमः श्री हनुमंते नमः अथ रसिक नागर राजनैतिवार्ता लिख्यते श्लोकः ॥

---

* बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना की ओर से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री के तत्त्वावधान में हस्त-लिखित पोथियों का संग्रह और अनुसन्धान बिहार भर में होता है। परिषद् में संगृहीत १०० (एक सौ) पोथियों के विवरण का प्रथम खंड 'साहित्य' के पिछले अंकों में प्रकाशित होता रहा है। अब, दूसरा खंड क्रमशः दिया जा रहा है।

—सम्पादक

नेतिनेति विबुधारमुनिवर रंगराजपदाम्बुज ॥
जगृदेवं प्रगन वाक्य शृणुत गुर अम्बुजं ॥१॥
पराचीनं चरित विदित कथित गुरमपनं ॥
जगृदेव प्रगन आनन हर्षित उर मजनन ॥२॥
वेद आदिकं नाद यादिक नेति सम्प्रजयोमन
रिषीनागरप्रमविदित स्वामीभोलाम्थीजत ॥३॥
सिप्यवाक प्रमन्यथोनित स्वामीभोला आनदं
जगृदेव धार उर सर्वशास्त्र अगुदं ॥४॥
मनुजकामरीना महत्वं सम्मत गुण हेतुन
भाषित समराजनेनं धमनरिपिसंम्यादनं ॥५॥

राजनेतवानी अहां बहुतनहथोर थोरतकलागे देरी
हैं नीच सो ऊच ऊच हैं मोटे नरचंगी
कहै सत्यभोला पुकारि गुण औगुण सम्भुरो है
दूनीको साथ दुग हेत हैं सुगो ॥१॥
केवडा और गुलाब फुलों मे यहै बडाई
तोहिमगकाटा लग गये तनीय हैं बुराई
कहै सत्यभोला पुकारि बरे दीपक की जोती
वामें कज्जल हुआ करत को चाहिरे मोती ॥२॥"

मध्य—पृ० ३७ "राज काज रोजगार बिना मत्री ना सोहे ॥
ब्योहर ब्याह दरबार बिना भेदीना सोहै ॥
कहै सत्यभोला पुकारियातपट तोमर सांचे ॥
दान धाम गुर करत नष्ट गुन तोमर यांचे ॥१६५॥
उत्तम केदली वृक्ष पुनीन फलिफरि नीचेनवता ॥
श्रुतिहार उन पाप फुले उपर जवना ॥
कहै सत्यभोला पुकारि गरीबीनवेम्तेऊ ऊचा ॥
नवे ना काठ कुठार जात हैं फूका कूचा ॥१६६॥"

अन्त—"रम्य रहो शतलोक शोक भय हुदत शरीरा ॥
होय निज अमर अडोल ॥ बसो रगराज मम तीरा ॥
कहै सत्य भोला पुकारि सुनो जगुदेव टहा बसिगे ॥
भजन डोरि मनमोरि फोरि ब्रह्मांड नीजु कसियो ॥४१३॥
राजनीति शतवचन पढ़ै सुनै गहो चित धरिया ॥
सोई होई जग चतुर सयाना जियतभव सागर तरिया ॥

कहै सत्य मोला पुकारि बारि मन चौदह वानी
अनुदिन छमि नीति पंथ रिपि सब गुनखानी ॥१९१॥

इतिश्री शुभमस्तु

फाल्गुण कौष्ण मास सप्तम प्रथ्वी सुत
लिख्यत रामनीलिम निधानस्यस्य सर्मणे ॥"

विषय—सदाचारी जीवन कर्तव्यनिष्ठा, परोपकार, सत्य-असत्य पाप-पुण्य, कर्तव्य-अकर्तव्य धर्म-अधर्म आदि का उपदेशात्मक विवेचन। साधु-असाधु, विद्वान्, मूर्ख आदि की परिभाषा। देखिए—"मित्रता सम नहीं धन दया सम धन न आना। क्षमा सम नहिं तापस संतोष सम नहि सुख आना ॥ कहै सत्य मोला पुकारि तप सम आन न जाना ॥ मौन सम नहि आता आन गुन हृदय न राख्या ॥१८७॥" प्रस्तुत पद में मित्रता, दया क्षमा, संतोष, मौन, भजन आदि गुणों के हृदय में स्थान देने के लिए ग्रंथकार निर्देश कर रहे हैं। एक स्थान पर कवि वेश्या के सम्बन्ध में लिखते हैं—

"काया पतिता मारि आपना छमा पाई ॥
कर धार सों प्रीति आपना मनसत गाई ॥
कहै सत्य मोला पुकारि धाम जो दिन करि पावै ॥
त्यागि आपना गर्भ धार को प्रान गवावै ॥७४॥
आपन बचा पाप किसी कर सूहा करावै ॥
वेश्या अजा छाडि कर आप बचाई ॥
कहै सत्य मोला पुकारि वेश्या का सत्कोमी ॥
यह तन सा मनसुख गह हाय दिरिसुत भैली ॥७५॥"

इसी प्रकार राजधर्म प्रजाधर्म और सचिवों के साथ राजा के बर्ताव आदि विषयों पर भी कवि ने रचना की है। शत्रु-मित्र के सम्बन्ध में कवि की उक्ति—"हँसि कै बोलै यार ताहि दुश्मन करि जाना। उपरि कहै समुझाय ताहित आपन मानो ॥ कहै सत्यमोला पुकारि मित्र हिय राखै पीरा ॥ दुश्मन मनसा हाल ऊपर हँसि बोलै बीरा ॥१९०॥" गृहस्थधर्म का भी उपदेश इस ग्रन्थ में दिया गया है।

टिप्पणी—इस ग्रंथ के ग्रंथकार श्री सत्यभोलास्वामी उत्तरप्रदेशीय गोंडा जिले में, बनकटवा स्टेशन के निकटस्थ नेनक टोली ग्रामस्थ ॐ जानकलपुर आश्रम के आचार्य हो चुके हैं। उक्त आश्रम में, उनके पूर्व ६ आचार्य और हो चुके हैं। जिनके नाम हैं —

श्रीगगराजस्वामी, श्रीउपरनन्दजी, श्रीउपनन्दजी, श्रीप्रनन्दजी श्रीअमनन्दजी और श्री दयारामजी। श्री सत्यभोलास्वामी श्री दयारामजी के उत्तराधिकारी थे। उक्त आश्रम में अनेक हस्त-लिखित ग्रंथ और दुर्लभ पोथियां सुरक्षित हैं। लगभग २८ ग्रंथ अभी तक अप्रकाशित हैं। 'श्रवण ग्रन्थावली' प्रकाशित है। 'श्रुतिसागर' और 'चन्द्र सरोवर' नामक दो ग्रंथ महत्त्वपूर्ण बताए गए। पहला ग्रंथ २५४ पृष्ठों का (प्रारम्भ गुरुपंट में और समाप्ति ब्रनगड में) और दूसरा १०२ पृष्ठों का है। पहली पोथी की पद्य-संख्या २१२४ दो हजार एक सौ चौबीस है। 'श्रुतिसागर' से कुछ पद —

"रघु राज गुरु सुमिरि उर, रामचन्द्र हनुमान।
गणपति सज्जन मुनिगण, श्रवण हृदय गुणगान॥
. . . . . . ॥
प्रथमे राम जन्म छवि मूला। सुनत कथा मेटत सब सूला॥
भौमवार मधुमास सुहाई। नौमी सित पुराण श्रुति गाई॥
पुनर्वसु मैथुन सुभ लगना। मध्य दिवस कोटिन सुभ गनना॥
चतुर्भुजी प्रभु रूप देखावा। मातु कौसिला अस्तुति लावा॥
तेहि तत्काल बाल तनु लीन्हे। सुन्दर स्याम मूरति प्रभु कीन्हे॥
रोदन करन लगे हरि तहँवां। मातु कौसिला बैठी जहँवां॥
.. .. ॥
गुरु वशिष्ठ उपरोहित आये। सगुन सोधि गुरु नाम धराये॥
रासि राम श्रीराम उचारा। तुला रासि करि नाम बदारा॥"

'चन्द्र सरोवर' (१८०७ पद्य) के भी कुछ पद देखिए —

---

* श्री रामानन्द साहित्यालंकार, सोनपुर (सारन) द्वारा प्रस्तुत विवरण के आधार पर। —ले०

अनंत रंका अनत शक्ती अनंत रूप पंथ ॥
रंकार अनंत रगराजधनु ॥ रामरंग अनंत शीपांजिनू ॥"

अन्त—"सुनहु रे मनमूढ़ नर तुम गहहु गुरु मत धाय के ॥
भली अवसर फेरि भटको काहे अटको आई के ॥
गुरु मंत्र महेश रावो रटत पुर सुर जाय के ॥
जासु जस रंगराज पंजा सुफल तन गुर पाय के ॥
श्रवनदेव शतवार पढ़ि है मुक्ति अग्रपुर पाय के ॥१॥
इति श्री रगराजपजा सम्पूर्णम् ॥"

विषय—इस मत के प्रथम और प्रधान आचार्य श्री रंगराजस्वामी की स्तुति और महिमा के वर्णन में रचना की गई है।

टिप्पणी—इस लघुकाय पुस्तिका में कुल ११ पद्य हैं। इन पदों में श्री रगराजस्वामी की वन्दना करते हुए कवि ने उनकी यशोगाथा गाई है और जीवन-चमत्कार का वर्णन किया है। ग्रंथ अप्रकाशित है। यह ग्रंथ सोनपुर (सारन) निवासी प० श्री रामानन्दजी साहित्यालंकार के सौजन्य से प्राप्त किया।

१०१-ख—ज्ञानरत्न—ग्रंथकार—श्री सत्यभोलास्वामी। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन, देशी कागज, पूर्ण। पृ०-सं०—७८। प्र० पृ० प० लगभग—२४। आकार—८"×६"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—माघ, कृष्ण, प्रतिपदा, सोमवार, सं० १९३९ वि० (१८८२ ई०)।

प्रारम्भ—"श्री गणेशाम्बिकाभ्यानमः श्री सरस्वतैनम श्री रामचन्द्रायनम. श्री रगराजगुरुभ्योनम श्री हनुमते नम ॥ अथ ज्ञानरत्न नाम ग्रंथ ऋषिनागरमतं प्रारंभ ॥ सवैया ॥ प्रथम ॥ गुरवाच ॥
श्री गुरगणपति ज्ञान निधानो आदि शक्ति जग माता है ॥
सरस्वती लछिमी सती सुप ब्रह्म विष्णु शिवदाता है ॥
वरुण कुबेर शशि सुरशेषा धर्म ऋषी मुनि लखंता है ॥
स्वामी भोला ध्वनि साहेब डोमा गुर मंतदेव गहि गवता है ॥१॥
सुमिरो निशु दिन गुरुपद अंतर जो गुरु ज्ञान लखाई है ॥
आठो पहर शीशधरि चरणन नाम रटनि धुनि लाई है ॥
धनि गुर दीन दयाल दया करि निजु मोहि दास बनाई है ॥
स्वामी भोला धनि साहेब डोमा रूप सत देव दरशाई है ॥२॥

"होय अमर अमरपुर जावै अमर रूप पिय पावै जी ॥
जरा मरण छूटै दुख सकट गर्भवास नहि आवै जी ॥"

अधोलिखित पदो मे योग-सम्बन्धी चर्चा देखिए—

"नाभि कमल निज है अष्टदल रूप वारह नीलरगा है ॥
विश्नु लक्षिमी सग सदा निजवास दोऊ एक सगा है ॥
शख चक्र गद पद्म विराजै वाहन गरुड निजु अगा है ॥
ताहां छौ हजार एक नामा मन देव जपि चगा है ॥१८२॥
हृदय कमल अनहद देखु मन वारह दल रूप श्वेता है ॥
सीवशती वसत है तहपर नदी वाहन वृषकेता है ॥"

इस प्रकार लोक, परलोक, भजन, नाम-महिमा आदि की विस्तृत चर्चा इस ग्रथ मे है ।

टिप्पणी—इस ग्रथ के ग्रथकार यद्यपि श्री सन्त सोलास्वामी प्रतीत होते है, किन्तु ग्रथ मे (पदों मे) यत्र-तत्र ग्रन्थकार के उत्तरवर्ती आचार्यों का भी नामोल्लेख है। उक्त आश्रम में श्री सन्त सोलास्वामी का स्थान सातवां है, किन्तु इनके बाद श्री धर्नीदेव जी, श्री सन्तदेवजी, श्री डोमा प्रसाद जी की चर्चा प्राय सभी पदों के अन्त में ('स्वामि सोला धनि साहेब डोमा सग सन्तदेव गुर गीता है।') आया है। यह भी सभव है कि उपर्युक्त महात्मागण इनके सम-कालीन हो।

ग्रंथ मे यद्यपि रचनाकाल का संकेत नहीं है तथापि 'तीनि सो साठि वार एक सम्वत प्रगट वानी गुरगीता है।' में सवत के सम्बन्ध में कुछ अस्पष्ट सकेत है। सम्पूर्ण ग्रंथ मे ३६२ पद है। ग्रथ की पुष्पिका मे लिपिकार ने लिखा है—

"ज्ञान रतन ग्रंथ यह पढै प्रीति करि कोइ, जागे ज्ञान बुधि भक्ति मन जीवन मुक्ति फल होइ
तीनि सौ वासठिवाचन गुरज्ञानरत्न है नाम, पढै गुणै सो साधुजन सुनी समुझै पावै सुखधाम ॥२॥
पढै लिखै समुझै बुझै होय साधु सो सत, ज्ञान दृष्टि जागै उर दीख परै आदि अन्त ॥

इतिश्री ऋषि नागर सत ज्ञान रत्न श्री संतदेवजी कृत्यं समाप्तम् शुभमस्तु ॥

सम्वत १९३६ माघ मासे कृष्णपक्षे प्रतिपदायां चद्रवासरे ॥ ज्ञानरत्नमीद लिख्यते भवन्देवस्य हेतवे ॥"

ग्रंथ की लिपि स्पष्ट और प्राचीन है। अवश्य, इस ग्रथ और ग्रंथकार तथा आश्रमस्थ अन्य ग्रथो के अध्ययन-उद्धार से हिन्दी-साहित्य की श्रीवृद्धि होगी। यह ग्रथ सोनपुर (सारन) निवासी प० श्री रामानन्द शास्त्री, साहित्यालकार के सौजन्य से प्राप्त किया।

सवैया ॥ राम के दूत महा अवधूतहि अंजनि पूत महाछबि छैया ।
लोम लंगूर महाछवि सुन्दर, कानन कुण्डल झोट धरैया ॥
हाथ गदा बजरङ्ग लियो कपि, शत्रुन केतु ममान मथैया ॥
मूँज जनेउ दिये वीर श्रवणहि, वेगिहरौ दुखराम दोहैया १"

मध्य—पृ० १४—"नाम फाल्गुन सखा पिगहि सीता शोक निवारन ।
लषण रक्षक दशकंठ भक्षक श्री रामदूत गदारनं ११६
महावीर्य्यं प्रथमवीरं नागकाय महाएडनं ॥
चरित रचित लंगूरयाणं हनुमंत सक्खंडन ११७
भूतप्रेत पिशाच राक्षस ब्रह्मराक्षस दाहनं ॥
डाकिनि शाकिनि अंतरिक्ष श्रवणवैरी गाहनं ११८"

अन्त—"रामभक्ति वरदान लीजे श्रवणदेव ममदासनं ॥
प्रेम गदगद पवन नंदन रूप मंगल रासनं २०८
पुताधिकहि हनुमंतवीरं जात द्रोणाचल गिरं ॥
श्रवण वन्दि पदारविंद हुरत नयनन नीरधीरं ३०६
रगरग बजरग वीरं वीर धीरं वीर वरं ॥
जगद्देव श्रवणदेव रंगराज उर भरं ३१०
पंचमावृत्तसमाप्तम् ॥"

दो० "मंगलचरित पुनीत कहि मंगलमोदक नाम ।
याण लंगूरहि श्रवण कथा सज्जन करौं प्रनाम ॥
अर्थ धर्म पद मुक्ति कहा पूर होत मन काम ।
याण लंगूर जो पठत नर श्रवण मिलैं कपिराम
सन ग्यारह सौ छानवे कार्तिक मास उजेर ।
तिथि पूरण भौमवार को लिखी धीमदेव फेर ॥
इति श्री मपूर्ण करि कुटिल वाट के तीर ।
अजावलपुर धाम मह मेटि सकल मनपीर ॥
इति श्री श्रवणदेव विरचितं लगूर याणस्तोत्रम् समाप्तम्
शुभमस्तु ॥"

विषय—पाँच आवृत्तों (अध्यायों) में सम्पूर्ण ग्रन्थ ।
हनुमान्-सम्बन्धी स्तोत्र, विनय तथा तन्त्रात्मक
पद्य । बीच-बीच में अपने मत के आचार्यों की भी
वन्दना की गई है । पूरे ग्रन्थ में ३१० पद्य हैं ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ में, एक ही जिल्द में (८५ पृष्ठों में) श्री मधमवेष श्री रचित १४ (चौदह)—(१—अंगुष्ठ-त्राण पुरश्चरणविधि, २—अंगुष्ठत्राण स्तोत्रम्, ३—रंगराज सहस्र नाम स्तोत्रम्, ४—रंगराजगुह्य समुदाय, ५—रंगराज कवच, ६—रंगराज पटल, ७—अष्टोत्तरनामावली ८—रंगराजाष्टक, ९—वर्मी अष्टक, १०—मुद्रिकाष्टक, ११—हनुमान पञ्चा १२—सोलमप्राष्टक, १३—सांगीत सम्प्रदायप्रकाशरी १४—हनुमान मुद्रा)—ग्रन्थ हैं। इनमें विशेषतः हनुमान् और साधारणतः अपने आश्रम के आचार्यों की वन्दना की गई है। ग्रन्थ मुद्रित किन्तु अलभ्य है। भाषा साहित्य और निगुण विचारधारा के दृष्टिकोण से ग्रन्थ अनुपमेय है। यह ग्रन्थ मानपुर (सारन) निवासी पं० श्री रामानन्द शास्त्री, साहित्यालंकार के सौजन्य से प्राप्त किया।

१०३—श्रीमद्भगवद्गीता—(हिन्दी-पद्यानुवाद) पंचकार—श्री हरिवल्लभस्वामी। लिपिकार—श्री रामप्रसाद दूबे। अवस्था—अच्छी प्राचीन देशी कागज। पृष्ठ-सं०—१२। प्र० पृ० पं०—लगभग ४०। आकार—७३/४"×११"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—सं० १९०१, शाके—१७६६ (१८४४ ई०) श्रावण, शुक्ला द्वादशी।

प्रारम्भ—"श्री गणेशायनमः। अथ पोथी भगवद्गीता। दोहा
कृष्ण कृष्ण श्री कृष्ण जू प्रथम करौं जुहार।
सफल करन को कामना कामधेनु निर्धार।१।
भगवद्गीता अथ सम है दोहा के मांह।
हरिवल्लभ स्वामी सभी भाषा कीन्हो ताह।२।
धृतराष्ट्रोवाच ॥ धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र म मिले युद्ध क काज।
संजय मो सत पांडु सुत करत कहां कछु काज।३।
संजय उवाच ॥ पांडव सकना व्यूह लखी दुर्योधन ढिग जाय।
आचारज भक्त द्रोण सों वाक्यों ऐसो भाय॥४॥
पांडव सेना अति बड़ी आचारज यूं देख।
तव द्रुपद सुत सिष्य मैं व्यूह को रच्यो विशेष॥५॥"

मध्य (पृ०—२०)—"मुकुट विराजत सीस पर संपचक्र तव हाथ
येहि विधि मोहि देपाइये प्रभुजी हो जगनाथ ४६
चारि भुजा धरि प्रगट ह्वै मो कों दरसन देह
··ती जो अनत है मोकों यासो नेह ४७
श्रीभगवानुवाच—तेहि देपायों रूप मैं अति प्रसन्न मन होइ
आदि अंत मो तेजमय देपि सकै नहि कोय ४८
वेद जज्ञ अरु तप कृपा अवर करत वहु दान
ऐसे मेरे रूप कों तो विनु लपै न आन ४६"
अन्त—"अद्भुत रूप श्री कृष्ण को सुमिरि सुमिरिहों ताहि
हर्ष होत मोकों बहुत विस्मय को नर ताहि ७६
जोगेश्वर श्री कृष्णजू अर्जुन है जागवर
तहां विजय अरु नीति है असंपदा अवर ८०
इह गीता अद्भुत रतन श्रीमुष कियो वषान
वारवार निर्धार किय परम भक्ति को ग्यान ८१
भक्तिवत्स्य श्रीकृष्णजू इहैं कियो निर्धर
करें भक्ति इच्या सुनें इहैं वेदको सार ८२
इति श्रीमद्भगवद्गीतासुपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सम्वादे···
अष्टादशोऽध्याय १८"

विषय—प्रसिद्ध गीता का हिन्दी-पद्यानुवाद। १८ अध्यायों में दार्शनिक विवेचन। संस्कृत गीता का संक्षिप्तीकरण।

टिप्पणी—१—इस ग्रंथ मे ग्रंथकार ने सरल और सहज भाषा में प्रसिद्ध श्रीमद्भगवद्गीता का हिन्दी-पद्यानुवाद (भावानुवाद) किया है। प्रचलित संस्कृत ग्रंथ के कई श्लोकों के भाव एक ही पद में दिये गये हैं। अत ग्रंथ कुछ संक्षिप्त हो गया है। जहां तक हो सका है, ग्रंथकार ने गीता के दार्शनिक और आध्यात्मिक पक्ष को अपने अनुवाद की भाषा में सरल और बोधगम्य बनाने का यत्न किया है। 'रचना में दृढ़ता और सर्वांगीणता के निर्वाह की कोशिश की गई है। देखिये—

"फिरि आवत भूलोक मे छिन पुन्य जब होइ।
आवागमनते करत है कामवंत जो लोइ ॥२१॥
भक्ति करत जे अनन्द है मोही में चित रापि।
जोग क्षेम तिनके करो निज जनको अभिलापि ॥२२॥"

१०४-रामचरितमानस (सटीक)—ग्रंथकार—गो० तुलसीदास। लिपिकार—×। टीकाकार—श्रीशुकदेव। अवस्था—देशी मोटा कागज पर लीथोमुद्रण, खंडित.। पृष्ठ-सं०—८९०। प्र० पृ० पं० क्रमभाग—२८। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। टीकाकाल—×।

प्रारंभ—"दो० गिरा अर्थ जल बीचि सम कहियत भिन्न न भिन्न।
बन्दौं सीता राम पद जिनहिं परम प्रिय खिन्न १७

कपि पति सुग्रीव ऋक्षराज जामवन्त निशाचर राज लंकेश विभीषण और अंगदादिक जो समस्त बानरों का समाज १ सब के सुन्दर चरण कमलों का मैं बन्दना करता हूँ जिन्होंने अधम शरीर ही में राम पाये २ अब जितने श्री रामचरण उपासक इस संसार में हुए हैं खग जटायु इत्यादि मृग गजेन्द्रादि सुर ब्रह्मादि असुर प्रह्लादादि नर अम्बरीष इत्यादि तो निष्काम भगवद्दास हैं तिन सब के चरण कमलों को मैं अभिवन्दन करता हूँ ३।४ या प्रकार समस्त श्री राम परिकर को नमस्कारादि करिके जगज्जननी जनकात्मजा श्री जानकी जी के चरण कमलों को मनाता हूँ जो अत्यन्त प्यारी करुणानिधान श्री रामचन्द्र की है और जा की कृपा से निर्मल बुद्धि पाऊगा ५।६ ता पीछे मन वचन कर्म करिके रघुनायक श्री रामचन्द्रजी के चरण कमलों को अभिवन्दन करता हूँ जो समस्त कल्यान गुणों के अमृतोदधि हैं ७ जैसे गिरा कहैं शब्द और शब्द का अर्थ और जल और जल की बीचि कहें तरंग ये कहने मात्र ही भिन्न हैं वस्तुत. एक ही हैं ऐसे ही श्री सीताराम को एकमति कर उनके चरणों को अभिवन्दन करता हूँ जिनको खिन्न कहे अत्यन्त आरत जीव परम प्यारे हैं अर्थात् जब यह जीवन कर्म्मोत्पन्नज्ञानरूप समस्त उपाय करिके खेद खिन्न होकर उपाय शून्य हो जाता है और·····होकर भगवत् प्रपत्ति अंगीकार करता है तब भगवत् का परम प्रिय होता है।"

मध्य—"दो० ग्रह ग्रहीत पुनि बात बश तेहि पुनि बीछी मार।
ताहि पियाइय बारुणी कहहु कवन उपचार ४॥

जिसको नवग्रह ने तो घेरि ही लिया है और सन्निपातत्रिदोष के वश है और ऊपर से बीछी ने मारा उसको बारुणी मदिरा और पियाई जावै तो कौन सा उपाय है॥४॥"

अन्त—"बिनु सन्तोष कि काम नशाहीं।
काम अछत सुख सपनेहुं नाहीं १
राम भजन बिनु मिटहि कि कामा।
थल बिहीन तरु कबहुं कि जामा २
बिनु विज्ञान कि समता आवै।
कोउ अवकाश कि नभ बिनु पावै ३

श्रद्धा बिना धर्म नहिं होई।
बिनु महि गन्ध कि पावै कोई ४
बिनु तप तेज कि कर बिस्तारा
जल बिनु रस कि होइ संसारा ५
सील कि मिल बिनु बुध सेवकाई।
जिमि बिनु तेज न रूप गुसाइ ६
निज सुख बिनु मन होइ कि थीरा।
परस कि होइ बिहीन समीरा ७
कवनिउ सिद्धि कि बिनु बिस्वासा।
बिनु हरि भजन न भव भयनासा ८
दो० बिनु बिस्वास भगति नहिं तेहि बिनु द्रवहिं न राम।
राम कृपा बिनु सपनेहुँ जीव कि लह बिश्राम ॥१६"

विषय—रामचरित।

टिप्पणी—यह प्रसिद्ध रामचरित मानस की विस्तृत टीका है। भाषा व्रजभाषा और शैली प्राचीन है। ग्रन्थ प्रारंभ में खंडित है। प्रारंभ के १४ पृष्ठ नहीं हैं। अन्त के पृष्ठ भी खंडित हैं।

यह ग्रंथ श्री ब्रजकिशोर मिश्र बिहार-विश्वविद्यालय पटना के सौजन्य से प्राप्त किया।

१०५—राम-जन्म—ग्रंथकार—संत सूरदास। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन हाथ का बना देशी कागज; खंडित। पृ० सं०—१४। प्र० पृ० पं० लगभग—१५ भाषा-हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारम्भ—"व्याहीनी कौशा तीनी सौ रानी।
तही मों तीनी पाट की रानी॥
कहइ कौसीला सुमीत्रा आभा॥
रूप रासी गुनी कहइ कैमी॥
सीव के संग सती रह जासी॥
राज करत बहुत दीन गयेऊ॥
आनंद मंगल बहु बीधी भयेऊ॥
एक दीन राउ अयोध्या आइ॥
सबर्ह रामा परे सुनाइ॥"

मध्य—"साठी सहस्त्र सुत जो अहइ।
ताके करच जन सभ रहइ॥
मांटी खोदी के नीर नीकारा।
लवन समुद्र कीन्ह नाम सवारा॥
खोदत महइ हस्ती ऐक पावा।
ताही देखी तब बचन सुनावा॥
जग्य तुरीआ तुम देखा भाइ।
सो तुम मो कहं टेरा बताइ॥"
अन्त—"जग्य तुरग हमही जे पाइ।
गरुड़ बचन माना तब गाइ॥
बाजी समेत कुवर पुन आंए।
देखी लोग आनन्द मन भांए॥
हरख सोक ताहां दोनो भएंट।
तुरीआ मीलन सब संसै गएंठ॥"

विषय—राम का जन्म, शिक्षा, विश्वामित्र की यज्ञ-रक्षा, विवाह और परशुराम-पराजय, प्रसगत श्रवणचरित और गंगावतरण का वर्णन।

टिप्पणी—क-ग्रथ खंडित है।

ख-इस ग्रन्थ की अन्यान्य ४ प्रतियां भी परिषद्-संग्रहालय में हैं। उनमें से एक का विवरण परिषद् द्वारा प्रकाशित 'हस्त-लिखित विवरण' के प्रथम खण्ड की पृ० स० ४५ में देखिये। नागरी-प्रचारिणी सभा की खोज-विवरणिका (सन् १९२६-२८ ई०) में, ग्रं० सं० ४७३ बी० में भी इस ग्रन्थ का उल्लेख है। उक्त विवरणिका में 'एकादशी माहात्म्य' नामक एक और ग्रन्थ (सत सूरजदास-लिखित) मिलने की सूचना है। एक और ग्रन्थ की सूचना खोज-विवरणिका (सन् १९२३-२५) में, ग्रन्थ स० १४७ (सी०) में मिलती है।

ग-ग्रथ की लिपि लीथो-मुद्रण है। खंडित होने के कारण लिपिकार के नाम, स्थान आदि के संकेत का अभाव है। अन्य प्रतियो से पाठान्तर भी है।

घ-यह ग्रंथ श्री अंजनिकुमार सिन्हा, बिहार-विश्वविद्यालय, पटना के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

गीहरहो .. ...पुन्य पर्पाव
असंध्य गौ गौ दरप भण्ड
हस्तीनापुर धाम दुर्धीष्टीन फीण
नीपजन्म श्रोता भोजेमुनी कहमनन्त
असंध्य दर्ठ भारत चौदह वर्णनीनाम

इति श्री अस्मेध जय महाभारथे जैमुनी संस्कृत भाषा प्रेम दास कीत जैमग्नी पुराने राजा दुर्धीष्टीलजाय वरण सपुर्न समाप्तेद भर्य पंचर्टनोअसोध्या ॥६५॥ शुभमस्तु ॥"

विषय—महाभारत के अंत में पांडवों के अश्वमेध यज्ञ और यज्ञ के घोड़े के छोड़े जाने तथा उसके देश-देशान्तर में विजय के लिए घूमने की कथा का वर्णन। श्री जनमेजय जैमिनी ऋषि से पूछते हैं और ऋषिवर कथा का सविस्तर वर्णन करते हैं। बीच बीच में सृष्टि, मृत्यु, पाप, पुण्य और कलियुग में मनुष्य और देवता की स्थिति का विशद वर्णन किया गया है।

टिप्पणी—(क) निम्नलिखित रूप से ६५ पैंसठ अध्यायों में कथावस्तु का निर्वाह हुआ है।

१—अनुशैलातुर आक्षरनो नाम, १२ (बारहमो) अध्याय—पृष्ठ-सं० ५० तक। (इसके पूर्व ११ अध्याय खंडित हैं)।

२—श्री कृष्ण समुझावनो नाम १३ (तेरहमो) अध्याय—पृ० सं० ५१ से ५५ तक।

३—महिषामति नगर तुरग प्रवेशोनाम १४ (चौदहमो) अध्याय—पृ० सं० ५५ से ६१ तक।

४—नीलध्वज विजय (को जीतनो) नाम १५ (पंद्रहमो) अध्याय—पृ० सं० ६१ से ७० तक। (बीच में १६ वां अध्याय नहीं है। पृष्ठक्रम आदि ठीक है, किन्तु उक्त अध्याय, प्रतीत होता है, अन्तर्लिखित है।)

५—सुधन्वा (कराहमेलनो) नाम १७ (सतरहमो) अध्याय, पृ० सं० ७७ से ८५ तक।

६—सुधन्वा युद्धवर्णन नाम १६ (उनैश्शमो) अध्याय—पृ० सं० ८६ से ९७ तक। (बीच में कई पृष्ठ और बीसवें अध्याय का अन्तिम पृष्ठ खंडित है)।

७—स्त्रीराज्य तुरग प्रवेशो नाम २१ (ऐकइसमो) अध्याय.—पृ० १०१८ से १०८ तक। (बीच में १० अध्याय खंडित है)।

८—उद्दुमन (गवनो) नाम ३२ (बत्तीसमो) अध्याय—पृ० सं० १६१ तक। (बीच के ३ अध्याय खंडित हैं)।

९—रामचन्द्र अश्वमेधयज्ञ सम्पूर्णो नाम ३६ (छत्तीसमो) अध्याय—पृ० सं० १६३ तक। (३७ वां अध्याय खंडित है)।

१०—पुष्पदरीजमपि (बावे पाताल गौ) नाम (अठतीसमो) अध्याय—पृष्ठ से २०३ तक। (३६ वाँ अध्याय खंडित है)।

११—अर्जुन वृषकेतु जीवनो नाम ४० (चालीसमो) अध्यायः—पृ० २१४ तक।

१२—रत्नपुर नगर प्रवेशो नाम ४१ (एकताकीसमो) अध्यायः—पृ० सं० २१६ से २११ तक।

१३—ताम्रध्वज युद्ध (वर्णनो) नाम ४२ (बेआलीसमो) अध्यायः—पृ० सं० २१६ से २२४ तक।

१४—ताम्रध्वज-अर्जुन युद्धवर्णनोनाम ४३ (तताकीसमो) अध्याय—पृ० सं० २२५ से २२८ तक।

१५—कृष्ण प्रार्थना नाम ४४ (चौआलीसमो) अध्याय—पृ० सं० २२८ से २३१ तक।

इसी प्रकार ४५ पैंतल अध्यायों में ग्रंथ समाप्त हुआ है, किन्तु बीच-बीच में कई अध्याय खंडित हैं।

(ख)—यह महाभारतान्तर्गत राजा युधिष्ठिर के अश्वमेधयज्ञ के आधार पर श्री प्रेमदासजी की मौलिक रचना है। ग्रंथ की भाषा पर यत्र-तत्र भोजपुरी का असर है। ग्रंथ और ग्रंथकार के सम्बन्ध में नागरी-प्रचारिणी की खोजविवरणिका (सन् १९२६-२८ ई०, पृ सं० ७४,५२३, और ग्रं० सं० ३५६) में भी चर्चा है। उक्त विवरणिका में ग्रन्थकार गोरखपुर जिले के बड़गाँव का निवासी बताया गया है। उसका सम्बन्ध मुजफ्फरपुर जिले के हाजीपुरीय श्री परशीयर पण्डित से था और उनसे ही कथा सुनकर, इस ग्रंथ की रचना उन्होंने की थी। नागरी-प्रचारिणी के विवरण में प्राप्त प्रति के उद्धरण से प्रस्तुत प्रति में पाठान्तर भी है।

(ग)—ग्रंथ के छत्तीसवें अध्याय में रामचन्द्र के अश्वमेध यज्ञ की चर्चा है और यह वाल्मीकिकृत रामायण पर आधारित है। इसके बाद के प्रसंग के प्रारम्भ के पूर्व 'दूसरा दंड' लिखा है। इससे प्रतीत होता है कि ग्रंथकार ने ग्रंथ को कई दंडों में विभाजित किया है किन्तु यह प्रति खंडित, जीर्ण-शीर्ण और अस्तव्यस्त है।

(घ)—ग्रंथ की अवतारणा जनमेजय और जैमिनि के कथोपकथन से की गई है। ग्रंथ अनुसन्धित्सु जगत् के लिए अत्यन्त नवीन है और सम्भवतः अमुद्रित और अप्रकाशित भी है

(ङ)—ग्रंथ की लिपि अस्पष्ट, प्राचीन और कैथी के सदृश है। लिपिकार ने अपना परिचय निम्नलिखित शब्दों में दिया है—"सम्वत १९११ शाके १७७६ सन १२६१ साल फाल्गुन तृतीया पक्षार्थ श्री बापू

जगनाथ सिंह आत्मज स्री यात्रू दुरगा दत्त मालीक महदीपुर प्रगने मुंगेर दसपत द्वारकानाथ मिश्र वासींदे महल्ला पुरानीगंज शाकद्वीपी टोला प्रगने मुंगेर श्री।"

यह पोथी श्री अर्जुन कुमार सिन्हा, बिहार-विश्वविद्यालय, पटना के सौजन्य से प्राप्त हुई।

१०७—भरथ विलाप—ग्रन्थकार—तुलसीदास। लिपिकार—श्यामलाल। अवस्था—अच्छी, हाथ का बना, देशी कागज। पृष्ठ-सं० ३२। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—२२ जनवरी, सन् १९०७ ई०, सन् १३१४ साघ।

प्रारम्भ—दोहा—"सुनत भरथ बीकल भए
धरती पर मुरछाए
तुलसीदास मन गहबरी
सोग न सोचा जाए
चौपाई—रोवत भरत चली गौ ताहां
सोग सो बैठी कौसीला जाहां
रोवत सुमीत्रा देखा जाइ
भरतही देखी माता दोऊधाक
भरत के पांवपरी दहनाई
भरत उठाइ के हीरदां लगाइ"

मध्य (पृ० सं० २५)—"चौपाई—रोवन भरथ पीता पहं जाइ
कर गही लोगन कहा बुझाई
सोहरे रोवत सभे मनी जाइ
मरीहैं कोसीला सुमीत्रा माइ
दोहा—तेहीछन हीरदें………
बोधे दोनो माऐ
तुलसीदास मन गहबरी
बीप्रह दीन्ह छोड़ाऐ"

अन्त—"चौपाइ—तुलसी भरथही कहा बुझाइ
नीत्वे सांसीजपहु मन लाइ
जेहीं ते नरक पाप छै जाइ
बाढ़े धरम सुमती गती पाइ
भरथ वीलाप पढे मन लाइ
सहंस होम सो दीन दीन करइ
जो इछा लरी जो नर पढ़इ

मीसचे ताही सकल सम कहइ
राम नाम कीन्ह पुरस्न
गुनत को एको बार
ताके जन्म सुफल भये
ताइ वचन है बार
दोहा—राम नाम कीन्ह के घर
तेही पुरखा तरी जाये
तुलसीदास भइ राम पद
राम नाम मन लाये

इतीश्री पोथी तुलसीदास कीरतीत भरथवीलाप संपुरन माइक जो पत्र मो देखा सो लीखा मम दोखन दीजीये मंतीत अन सों चौकसी मोरी दुख अछर कैम सम मोरी। इती पोथी भरथ बीलाप सम्पुरन ०"

विषय—कैकेयी द्वारा सब समाचार सुनना और भरत की मूर्च्छा और विलाप, वनगमन की प्रक्रिया राम-भरत-मिलन। कुल १८ दोहे और १२७ चौपाइयों में ग्रन्थ समाप्त।

टिप्पणी-(क)—यह ग्रन्थ खंडित है। ग्रन्थकार तुलसीदास हैं। किन्तु ग्रन्थ की भाषा रचना-शैली आदि से रामचरितमानस के प्रणेता गो० तुलसीदास नहीं प्रतीत होते हैं। तथापि अन्य सूचनाओं के अभाव में नागरी-प्रचारिणी की खोज-विवरणिका के सम्पादक महोदय ने इसे भी गो० तुलसीदास की ही कृति माना है। देखिये—ना० प्र० की खो० वि० सन् १९११ १८ ई० पृ० सं० ७७४, प्र० सं० ४८५ पृ०। ग्रंथ की एक प्रति श्री मन्नूलाल पुस्तकालय, गया में भी सुरक्षित है। दे० मन्नूलाल० विवरणिका—ग्रन्थ-सं० ४८।

(ख)—ग्रन्थ की लिपि स्पष्ट किन्तु प्राचीन है। यह ग्रन्थ श्री प्रसादीराम जी, मंत्री, आर्यसमाज बबरीसराय मुंगेर के सौजन्य से प्राप्त।

१०८—नागलीला—ग्रन्थकार—×। लिपिकार—श्यामलाल। अवस्था—अच्छी हाथ का बना देशी कागज। पृ० सं० १०। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—१ अप्रैल, सं० १९०५ वि०।

प्रारंभ—"श्री गनेसजी सदा सहाए नमह
श्री रामजी सदा सहाए नमह
श्री कालीजी सदा सहाए नमह
श्री गंगाजी सदा सहाए नमह
श्री पोथी नागलीका लीख्यते

पार ब्रह्म पुरुषोतम जदुकुल में अवतार
भगती प्रेम वसी नन्द ग्रीही प्रगट भऐ कर तार
चलो चलो सखी जहां जाईऐ जांहां नद के लाला भऐ
धन धन जसोदा भाग तेरो गोखुला के दुख गऐ
सुभ घरी सुभ दीन मंगल नन्द के लाला भऐ
गोप गोपी गोआल वालक करन उतसव सभ गऐ
ऐक सोहागीनी सोंठ कुटे ऐक वदत वंदना
ऐक सोहागीनी चौक पुरे ऐक चंदन रोचना"

मध्य (पृ०-सं० ७)—"गोखुला हमारो ग्राम है नद के हम पुत्र नागीनी
क्रीस्न हमारो नाम है कहत नागीनी हरी सों वातें
जाहु वालक भागी के जो तुम्हारी खवरी पहहीं
नाग उठी हैं जागी के नाग जागे हमही लागे"

अन्त०—"करजोरी नागीनी करत वीनती प्रभु त्रीआ वंदी छोडाइऐ
अही वात है जसोदा के नदन वदी तेरी कहाइऐ
धीर धर आधीर नागीनी मांगे सो वर पाइऐ
सुन के प्रभु नागलीला रासी मयदल गोईऐ
इति श्री पोथी नागलीला सपुरन जो पत्र मो देखा सो लीखा मम दोख
ना दीजीऐ पंडीतजनसों वीनती मोरी टुटल अछर लेत्र सभ जोरी"

विषय—श्रीकृष्ण-जीवन-सम्बन्धी नागों की लीला। श्रीकृष्ण जीवनोत्सव, गोपियों में उत्साह और हर्ष। शुभ दिन, लग्न आदि देखने के लिए पण्डितों का बुलाया जाना। श्रीकृष्ण द्वारा गेंद का खेल। गेंद के लिए यमुना में कूदना। नागिन का कोप और श्रीकृष्ण से परिचय। नाग-जागरण के पूर्व ही श्रीकृष्ण को भागने का नागिन के द्वारा परामर्श दिया जाना। नाग को नाथने का निश्चय और श्रीकृष्ण-नागिन-विवाद। कृष्ण द्वारा वंशी-वादन। गरुड़ की पहुँच। नाग की मूर्च्छा। नाग का नाथा जाना। नागिन द्वारा श्रीकृष्ण की विनय। नागलीला-पाठ फल।

टिप्पणी—१-ग्रन्थ के प्रारंभ के २ पृष्ठ खंडित हैं। ग्रन्थकार के नाम का उल्लेख नहीं है। कथा श्रीमद्भागवत के आधार पर लिखी गई है। रचना में कवित्व का अभाव है। भाषा में प्रवाह नहीं है।

२-ग्रन्थ की लिपि अस्पष्ट और प्राचीन है। लिपिकार ने अपना परिचय निम्नलिखित शब्दों में दिया है—

"हमारा ठेकाना—सहर कलकत्ता जान वाजार फेरी इस्कुल रास्ता नंबर

अन्त—छन्द—"श्री श्रीमन्त घंट बजाऐ आरती जोती चद्र सम करे
श्रीजानद प्रसाद पावे जन्म जन्म दुख हरे
जो नर गावही दानलीला सुनही मन चीत लावही
कोटी तीरथ करे को फल श्रीमनुलोक सीधावही

दोहा—लील्या अगम अपार है सोभा बरनी ने जाऐ
छत्रपती सुभ दरस को, सदा रहे चीत लाऐ
इतीश्री पोथी दानलीला संपुरन"

विषय—यमुनातट पर, समीपस्थ वनकी ओर जानेवाली गोपियों से श्रीकृष्ण तथा उनके साथियों द्वारा दधि के दान की याचना। गोपियों द्वारा कंस नृप का भय दिखाया जाना। कृष्ण को दान से विमुख करने का प्रयत्न। कृष्ण का, निर्भयता दिखलाते हुए, अपनी शक्ति का परिचय देना। व्रजवनिता का आत्मसमर्पण और ईश्वर रूप में श्रीकृष्ण की स्तुति।

टिप्पणी—यह प्रसिद्ध 'दानलीला' की खंडित प्रति है। इस में यत्र-तत्र पाठभेद तो है ही, साथ ही मध्य में अनेक पंक्तियाँ छूट भी गई हैं। इसके ग्रंथकार श्रीकृष्णदास जी 'पयहारी' नाम से प्रसिद्ध हैं। इनकी चर्चा नागरी-प्रचारिणी की खोज-विवरणिका में भी है। देखिए—खो० वि० १९२६-२८ की पृ० सं० ५६, ग्रं० सं० २४७ और खोज-विवरणिका सन् १९०३ तथा सन् १९२३-२५ ग्रं० सं० १९। सन् १९२६-२८ की विवरणिका में ५ हस्तलेखों का उल्लेख है। अब तक प्राप्त प्रतियों में सबसे प्राचीन हस्तलेख का काल सन् १६५६ ई० है। यह ग्रन्थ प्रकाशित है। ग्रन्थ सं०, ७, ८ और ९ एक ही जिल्द में है। यह ग्रंथ श्री प्रसादीराम, मन्त्री, आर्य-समाज, लक्खीसराय, मुंगेर से प्राप्त।

इतीश्री वन्दीमोचन रामचंद्र नारदमुनी ग्रन्था पुनाख्यान धरनोनाम नमोभ्यपाए६ ॥
इतीश्री पोथी वन्दीमोचन के पाठ भाषा छीपने समत १८६७ ग्रमें नाममी मार्दोवदी
१४ वार बुधे पे तद्‌आरम्भाय ॥"

विषय—माहात्म्य। पुत्रदा देवी की स्तुति। पुत्र-प्राप्ति के लिए वंदना की पोथी।

टिप्पणी—यह लघु पुस्तिका पुत्र प्राप्ति के लिए वन्दना के रूप में लिखी गई है। इसमें, प्रारंभ में ग्रंथ का माहात्म्य, ग्रंथपाठ अथवा स्तुति का फल लिखा हुआ है। बाद में पुत्र प्राप्ति के लिए प्रयत्नवान् की गाथा और उसके प्रयत्न का उल्लेख हुआ है। ग्रंथ में ग्रंथकार और लिपिकार का नामोल्लेख नहीं है।

१—इसकी अन्य प्रतियों की प्राप्ति का उल्लेख नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) के खोज-विवरण में है। देखिये क—त्रयोदश त्रैवार्षिक विवरण (१९२६—२८ ई०) तृतीय परिशिष्ट (पृ-सं० ७८२) की ग्रंथ-संख्या—१४) और ख—चौदहवें वार्षिक विवरण (सन् १९२९—३१) के तृतीय परिशिष्ट (पृ-स ६७१) की ग्रंथ-संख्या-५२६। नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) के १९२९—३१ ई० के के विवरणस्थ ग्रंथ का लिपिकाल सन १८८८ ई० है।

२—ग्रंथ की लिपि प्राचीन और अस्पष्ट है। यह ग्रंथ परिषद्-मन्त्री आचार्य शिवपूजन सहाय जी के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

१११—सभाविलास—ग्रंथकार—लल्लू (लाल कवि)। लिपिकार—श्री दुर्गामिश्र। अवस्था—अच्छी, देशी कागज। पृ० सं०—५४। प्र० पृ० प० लगभग—२३। आकार—६$\frac{३}{४}$"×६$\frac{१}{२}$"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचना-काल—×। लिपिकाल—×।

प्रारम्भ—"अथ सभा विलास लिख्यते ॥ सोरठा ॥

विघन हरन गनराय मूषक वाहन गजवदन
गनपति चरन मनाय तबै काज कछु कीजिये ॥
दोहा ॥ आनन भाजन स्वाद इम पर्यौ गयो हमलिन्द
कृष्णचरण अरविन्द को पियत सदा मकरन्द २
ममता भ्रमता के मिटे उपजे समता ज्ञान
रमता रमता रामसो जमता गहे न मान—३
साध सत्यो न तु साध सग लाय न सत्यौ समाध
विषै विषाद उपाधि तज हरि पल आध—४
निगमहु गीता ने कह्यौ पर्म पुनीता नाम
वीत्यौ जन्म जु जात है भज ले सीताराम ५"

मध्य—[पृ० सं० २७] "अथ कुंडलिया ॥

ऐसी बहु भामिनी भ्यारी घोर अपार
चिमीचारी तोपीरीमी भगर भार को पार
भगर भारको पार भूमि परसोत न कोउ
सो सो सौर न्याय चित पूछा नहि दीजे
कहै गिरधर कविराय धरे आवे अनपरी
हितका कहै बनाय भामिये पूछो बेरी १"

अन्त—"ऐसकार कंचन वर्ण रोचन पिय के संग
हिये हुलास सदै काम को बज्यौ जो जोबन अंग ६८
बोल यहे गावत चहुत रोनति है बहु बार
तन दुर्बलक विरहा दहै विरहिनी नारि सकार ६९
सेज बिछाइ कमल दल फैलि रहि मनमारि
नैन उसास रमी परी तलफत वियोगिनि नारि ७०"

विषय—सभा में वार्तालाप के योग्य विभिन्न छंदों के छोटे प्रश्नोत्तर, कुंडलियाँ और पहेली आदि ७० पदों का संग्रह।

टिप्पणी—१—ग्रंथ में ग्रंथकार का नामोल्लेख संभवतः स्पष्ट नहीं है। नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) के हस्तलिखित पोथियों के चतुर्दश विवरण (सन् १९२६–२८ ई०) के २११ संख्यक ग्रंथ के विवरण में लिखा है—"आगरे के लल्लूजी लाल प्रसिद्ध रचनाकार हो चुके हैं।" इस ग्रंथ की प्रति, उक्त विवरण में विवृत है। देखिये २११ सी० और डी०।

इसके अतिरिक्त इस ग्रंथ की अन्य प्रतियाँ भी नागरी-प्रचारिणी सभा को खोज में मिली हैं—देखिए—चौदहवाँ त्रैवार्षिक विवरण [सन् १९२९–३१ ई०] पृ० सं० ६० और ४१५ ग्रं० सं० २१२ बी०, ई० और एफ०। तथा, देखिए नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) से प्रकाशित "हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण" पहला भाग की पृ० सं० १५१। कवि की निम्नलिखित अन्य कृतियाँ भी मिली हैं—१ लालचंद्रिका २ प्रेमसागर, ३ हिन्दी-अँगरेजी और फारसी कोष, ४ राजनीति, ५ माधवविलास। इनमें 'प्रेमसागर' का रचनाकाल—सं० १८६०—१८०३ ई० और लि० का० सं० १९१०—१८५३ ई० है।[1] 'राजनीति' का रचनाकाल सं० १८५९ (१८०२ ई०) और लि० का० सं० १८६७—१८१० ई० है। 'सभाविलास' (प्रस्तुत ग्रंथ) की जो प्रति नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को खोज में मिली है, उसका र० का० सं० १८७० (१८१३ ई०) है और लि० का० सं० १८७३—१८१६ ई० है। इनके अतिरिक्त इनके ग्रंथों के लिए देखिये खोज-विवरणिका सन् १९०९—११ ई० की ग्रं० सं० १७४।

२—ग्रंथकार श्री लल्लूलालजी हिन्दी के प्रथम गद्यलेखक समझे जाते हैं। इनका उपनाम 'लालकवि' था। ये काजिम अली के समकालीन, आगरानिवासी; जाति के गुजराती ब्राह्मण और कलकत्ता के फोर्टविलियम कालेज में हिंदी के अध्यापक थे। सं० १८६१ वि० के—

---

१ नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) के खोज विवरण (सन् १९२९—३१ ई०) की पृ० सं० ६० और ग्र० सं० २१२ के आधार पर।

लगभग वर्तमान थे।[२] नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) के खोज-विवरण में उद्धृत इस ग्रंथ की पुष्पिका में इनका परिचय निम्नलिखित है—"इतिश्री लल्लूजी लालकवि ब्राह्मण गुजराती सहस्र अवदीच आगरेवासीकृत सभा विलास संपूरन समाप्त॥"

इनके अन्य ग्रंथ मुद्रित हो चुके हैं। कवि उदित-विदित हैं। यह ग्रंथ सम्भवतः अप्रकाशित और साहित्य-जगत् के लिए अपरिचित है। ग्रंथ प्राचीन लीथो-मुद्रित है।

२—यह ग्रंथ परिषद्-मंत्री आचार्य शिवपूजन सहाय जी के सौजन्य से प्राप्त हुआ है।

११२—बारहमासा—ग्रन्थकार—सन परमानंददास। लिपिकार—संत परसाद। अवस्था-अच्छी, पुराना कागज। पृ० सं०—२४। प्र० पृ० पं० लगभग—१८। आकार—५"×८"। रचनाकाल—×। लिपिकाल—भाद्रपद अष्टमी, शुक्रवार, सन् १२८७ फसली।

प्रारंभ—"छती अनवजर वेचार जंजीराटे गए।
छनीसेज भेआवन भारी रात है॥
नीस दीन ही पछतात बीरह से जात है।
कासे कहो इअह दरद में अपने प्रीत की
आगी लगो बोही देस चलन बोही रीत की
सभ सखीजन पीव बीदेस से आइआं
मेरो बलम्ह आमीत बीदेसे छाइआं

दोहरा॥ ऐसे समे आसाढ की॥ पीव रहे बीदेसे छए।
नीरखी घटावन की छटा॥ पीव बीनु मन कक्षाये॥

मास सावन॥ सावन मास सोहावन जल थल मही भरे
कत कुसंतबीदेस न जानो बस रहे॥
घन गरजत घन बरसत दमकत दामीनी
डरपत भवन भेआवन सुनी भामीनी॥
कबही झटाके टूट घटाके रोकसे॥
कबही झकोरत मेघ पवन के झोंक से॥
गगन तडकत मेघ कड़कत छातीआं॥
बीरह भरी रस बैन सुनावत बातीआं॥
बोलत दादुल मोर बीरह की बोलीआं
बीरहीन के हीए मांह लगे जस गोलीआं"

मध्य—[पृ० सं० १३]
"मास पुस॥ आए पुस के मास·· तरवरवास है॥

२. ना० प्र० स० (काशी) से प्रकाशित "हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण" की पृ० सं० १५१ के आधार पर।

बीरहीन को इमद मास गके का दोस है
रात बडी मोही नीद न आवत नैन मे ॥
सीसीर सम की रात न कुछ चीत चैन मे ॥
करवट करवट फ्रात कर है मस्या करे
मेरो कोइ पीआ के सग मन मो करे ॥
कोइ न साथी संग सखीआ सहेलीआ
जाको कुक सुनावों बीरह पहलीआ ॥
एक दीपक है । साथ सोवासन जोवकी ॥
सडकी सडक बड गैन गोरत सन बोवकी"

अन्त—'बहुमासी के आस है काम बनावही ॥
माही मासों के मधम मधरस पावही ॥
पुरी आस होउ की चहुत हव तोर की ॥
वैसे पुरबहु आस सदा सींव मावकी
दोहरा ॥ मीरबहुर संग्रात होए सुख होकर पनु काम
बचन तथा सम परेमकी कहत मपेवमी सम से

इतिश्री बीरहमासा मुनशी परमानन्द साकीन करी मोकाम आरे मत पे मुंशी सम्पतप्रसाद मे छापागया ता० ८ भादो रोज सूक सन १२७७ फसली ॥"

विषय—विरहिणी की बारहों महीने की विरह-दशा का करुणापूर्ण वर्णन ।

टिप्पणी—१—इस लघुकाय पुस्तिका में बारह महीनों म विरही और विरहिणी की मनोदशा का बड़ा ही रोचक और साहित्यिक वर्णन है। ग्रन्थ में 'गुजारीआं, रीकाबिजां, आइयां, पाइयां' आदि शब्द-प्रयोग पंजाबी भाषा स प्रभावित प्रतीत होत है।

२—ग्रंथ की लिपि स्पष्ट है। अन्य हस्तलिखित पोथियों के समान ही 'ब' और 'व' तथा 'ष' और 'ख' क प्रयोग हुए हैं। लिपि प्राचीन कैथी-सी है।

यह ग्रंथ श्री जनार्दनप्रसाद नारायण, पहियापां, छपरा (सारन) क सौजन्य स प्राप्त हुआ।

११२—सूर सागर—ग्रन्थकार—सूरदास। लिपिकार—×। टीकाकार—×। अवस्था—प्राचीन, मोटा देशी कागज। पृष्ठ-संख्या-११६। लिपि—नागरी। प्र० पृ० पं० लगभग १८। आकार—८"×६"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारम्भ—"अथ सूर सागर राग संग्रह कृत ॥
श्री कृष्णायनमः ॥
राग सामरोऽथ राग कल्पद्रुम ॥
जसनो दीनसेव प्रभुजी क महात्म्य तथा लिखे पत्रिका।

राग विलावल ॥ करनी करुना सिंधु की 'कहत न आवे ॥
कपट कपट तेरे पर सेव की जननी गति पावे ॥
दुखित गजेन्द्रहि जानि के आपुन उठि धावे ॥
कलि में नाम प्रगट नीचता की छानि छवावे ॥
उग्रसेन की दीनता प्रभु के जिय भावे ॥
कंस मारि राजा कियो आपुन सिरनावे ॥
वरुण पासते वृज पतिहि छिन में छुटकावे ॥
बहुत दोष मो सूर कहँ ताते गह रल गावे ॥१॥

राग विलावल ॥ माधौ भुज कहां दुराए ॥
जिन्ही भुजनि गोवर्द्धन धारयौ (सुरपति गर्व नसाए ॥
जिन्ही भुजनि काली को नाथ्यो कमल नाल लै आए ॥
जिन्ही भुजनि प्रह्लाद उबारयो हिरण्याक्ष को धाए ॥
जिन्ही भुजनि गजदन्त उपारे मथुरा कंस ढहाए ॥
जिन्ही भुजनि दांवरी बधाए जमला मुक्ति पठाए ॥
जिनही भुजनि अघासुर मारयो गोसुत गाय मिलाए ॥
तेहि भुज की बलि जाय सूर जन तिनका तोरि दिखाये ॥"

मध्य—(पृ० सं० १५८)

"रागगौरी—मुरली प्रकट भई सो कैसी ॥
कहां रहति कैसे यह आई गोपे स्याम अनैसी ॥
मात पिता कैसे हैं वाके या की गति प्रति एसी ॥
एसे निठुर होहिंगे तेऊ जैसे की यह तैसी ॥
यह तुम नहीं सुनी हो सजनी याके कुल को धर्म ॥
सूर सुनहु अवही सुख पैहौ करनी उत्तम कर्म ॥"

अन्त—"तीय मान हरि एसे छुड़ायो भक्त हित लीला करी ॥
निगम नेति अपार गुण सुख सिंधु नट नागर हरी ॥
यह मान चरित पवित्र हरि को प्रेम सहित जु गावहीं ॥
करहि आदर मान तिनको सत जन सुख पावहीं ॥
राधा रसिक गोपाल को कौतूहल रस केलि
वृज वासी प्रभु जनन को सुखद काम तरु बेलि ॥
सुफल जन्म तास जे अनुदिन गावत सुनत ॥
तिनको सदा हुलास सूरदास प्रभु की कृपा ॥
इतिश्री कृष्णानंद व्यास देव राग सागरो ॥
इव सूर सागर राग कल्पद्रुम रास लीला संपूरन ॥"

विषय—श्रीकृष्ण की महिमा, उनका गोपियों के प्रति प्रेम गोपियों का विरह और ऊधो के हाथ संदेशा भेजना आदि ॥

टिप्पणी—इसके ग्रन्थकार भक्त कवि सूरदास हैं। ग्रन्थ भागवत का अनुवादमात्र है। कथावस्तु का आधार श्रीमद्भागवत है। प्राचीनता के कारण ग्रन्थ के पत्र कहीं-कहीं लम्बित हैं। लिपि नागरी का अर्द्धविकसित रूप है। कहीं-कहीं कैथी अक्षर भी लिखे गए हैं। सम्पूर्ण ग्रन्थ श्रीकृष्ण-गुणानुवाद से ओत-प्रोत है। ग्रन्थ के अन्त में ग्रन्थकार ने श्रीकृष्ण की भक्ति-विषयक भावना का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया है।

११४-ज्ञान सरोदे—ग्रन्थकार—श्री चरनदास। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन मोटा देशी कागज। पृष्ठ-संख्या ३१। प्र० पृ० पं० सं०—लगभग १६। लिपि—नागरी। भाषा—हिन्दी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—फागुन कृष्ण १०। संवत् १८७७ ॥

प्रारंभ—"राम जी

• श्री गनेसाये नम ।
सुकदेव जी सहाये ॥ ग्रंथ ग्यान सरोदे ॥
श्री चरनदास कीत ॥

दोहा ॥ नमो नमो सुकदेव जी ॥ प्रनमो गुरु अनंत
तु प्रसाद स्वर भेद को ॥ चरनदास वरनंत ॥
परमातीम पर आतमा ॥ पुरन सीम्बा वोम
आदी पुरुष अवीचल तही ॥ ताही नवावा सीस ॥

कुंडलिया—एक देव सो कहत है ॥ अधर सो ध्यो आव
मेरद अधर स्वामा रहीत ॥ ताही को मन लाव
ताही का मन लावी ॥ ताही होय तरनी लगावो
आप आप चोवारी ॥ मौहन सीस नवावा ॥"

मध्य—(पृ० संख्या १६)

"सामी होवें बहुरेनदी आवन की नहीं आम
रहीये चरन न चलीये, रहीम पसोम जाओ।
आर आप बहुरे नदी ल्यों बहु आय ताही
रहीये स्वर मह आइये दुर्ग बहार मन को
सब संपती आनन्द के सब होवें चमत्कार
चरि स्वर मह आवे रहीम पसोम देस
सब संपती अनंद कर आर आप परदेस ॥"

अन्त—"नीर चले जब साम मो रन ऊपर चढ़ी मीत
बैरी को सीर काटी कै घर आवे रन जीत
प्रीयी के प्रगास मे जुधी करै जो कोऐ
दाउ दल रहे बराबरी हारी वाऐ मो होऐ।
अग्नी तंत के वहवही जुधकरन मती जाव
हारी होऐ जीतै नही और भाव तन घाव॥"

विषय—सन्त-साहित्य। कबीर-दर्शन से मिलती-जुलती भावना। नाद, विन्दु, इड़ा, चक्र, अनाहतनाद, शब्द, वैन, पहिया, काल और निकाम आदि का विवेचन। निर्गुण विचार-धारा की मीमांसा से ओतप्रोत।

देखिये.—

"नीराकार अलीप तु देही जानी अकार।
आप न देही मानते ऐही तन तत् प्रमार॥
देह मेरं तु अमर अविनासी श्रीयान।
देह नही तु ब्रम है व्यापो सकल जहान॥"

योग की स्वर-प्रक्रिया और गमनागमन से सम्बन्धित श्वास के फलाफल का दिग्दर्शन। विभिन्न दिशाओं की यात्रा में दक्षिण, वाम एव मध्य श्वास की प्रक्रिया एव आरोहावरोह के परिवर्तन की विधि और उसका प्रभाव। पाप, पुण्य, सद्गति, सत्पुरुष, नाम, परमलाभ आदि का पुन -पुन प्रयोग और मोक्ष-धाम तथा निर्वाण की विशिष्ट व्याख्या।

टिप्पणी—इस ग्रथ के ग्रथकार श्री चरणदास हैं। जैसा कि पुस्तक के नाम से ज्ञात होता है, सम्पूर्ण पुस्तक स्वर-प्रक्रिया की विधि से भरी पडी है। भाषा सरल है। हस्तलिखित प्रति अव्यवस्थित हालत में है। दोहा, कुण्डलिया और चौपाई ये तीन प्रकार के ही छन्द इस पुस्तक में मिलते हैं। कबीर के समान 'अनहद', 'सुन्न' आदि पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग हुआ है। 'ब्रम' शब्द का प्रयोग 'ब्रह्म' के अर्थ में किया गया है। स्वर प्रक्रिया को ब्रह्म-प्राप्ति (निर्वाण) का माध्यम बताया गया है। देखिये —

"आसन पदुम लगाइके ऐक ब्रत नीत साच।
वैठे लेटे डोलते स्वास ही अव राच।"

यह ग्रथ प० श्रीगणेश चौबे, ग्रा० बँगरी, जि० चम्पारण के सौजन्य से प्राप्त किया।

११५-भागवत भाषा—ग्रन्थकार—कृपाराम। लिपिकार—बा महेशर दास। अवस्था—प्राचीन, सजिल्द, हाथ का बना देशी कागज। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। पृष्ठ-सख्या—२४४। प्र० पृ० पं० स० लगभग १८। रचना-काल—× । लिपिकाल—आषाढ़ कृष्ण पक्ष सवत् १९५० वि० (१८१५ शाके)।

शाके १८१५। समय नाम.. . कृष्ण दसम्यों भौम वासरे पोथी एकादश स्कंध समाप्त संपुरन भैल दशपती वा महेशर दास साधु। मर्मं नाम असाढ़ ता.। रोज सुक के तैयार भएल जो देखा सो लीखा मम दोष न दियते। सुभ सम्वत १६५०। शाके १८१५। सन १२१०० साल मौजे टीकुआ (कुटिआ) तापापरठा प्रगना मठौआ।

पोथी दसपती लीखत वा महेशर
दास सा'ए दसपत शहि.॥"

विषय—भागवत के एकादश स्कन्ध का अनुवाद। कृष्ण-कथा-वर्णन। ईश्वर-भक्ति का माहात्म्य-वर्णन। कहीं-कहीं अव्यक्त ब्रह्म का निरूपण।

देखिए—"तीन के तनए भए सत एका।
ब्रह्म चार भए गहीत विवेका॥" आदि

सर्वत्र भगवद्भक्ति के उपदेश भरे-पड़े हैं। देखिए—

"हरि बीनु रहित सकल जे करमौं
ते सव जानेहु माया के भरमौं
श्री मुख आपु कहो जगदिशा
लहै जीव जेही बीधी करिइशा॥"

उद्धव का ज्ञानोपदेश और गोपियों की अनन्य कृष्ण-भक्ति का वर्णन। सम्पूर्ण पोथी ३१ अध्यायों में विभक्त है। लेखक ने विषयों का वर्गीकरण बड़े सुन्दर ढंग से किया है—

(क) ईश्वर-गुणानुवाद।
(ख) जाना नारद का वसुदेव कीहां।
(ग) कवी नाम प्रथमे योगी ने बोले।
(घ) हरी नामा नाम दूसरा जोगी बोले।
(च) हंस औतार कथा।
(छ) भगवत उद्धव जी।
(ज) सन्तों का हाल वरनन।
(झ) उधौजी का बदरीकाशरम जाना।

इस ग्रंथ के लेखक कृपाराम हैं। यह ग्रंथ भागवत के एकादश स्कन्ध का अनुवाद है। इसका प्रारम्भ सोरठा से हुआ है। सोरठा, दोहा, चौपाई और छन्द—ये चार प्रकार के छन्द ग्रंथ में प्रयुक्त हुए हैं। भागवत की कथा के अतिरिक्त ईश्वर के अव्यक्त स्वरूप का विस्तृत विवेचन, भागवत के मूल-पाठ का स्मरण दिला देता है। उपदेश और कथा-प्रसङ्ग का निर्वाह सुन्दर है। भाषा हिन्दी के प्रारम्भ-काल की है। लिपि नागरी है। कहीं-कहीं कैथी का भी प्रयोग है। पुस्तक सजिल्द है। यह ग्रन्थ पं० श्रीगणेश चौबे, बँगरी (चम्पारन) से परिषद् के चौबे-संग्रह के लिए प्राप्त।

११६ राम-दोहावली—ग्रंथकार—रामसनेह। लिपिकार—×। अवस्था—जीर्ण-शीर्ण। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। पृष्ठ-संख्या—१२। प्रतिपृष्ठ पंक्तियाँ—लगभग २०। आकार—८"×६"। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारम्भ—" श्री सीतारामाय नमः चंबरीक
बरनो चाहवोतर सीव रघुवर सेवकाइ
सीव राम पदपङ्कज कोटिन मुप बरनत नित कहि न सकहि
सारद बिधि सिव स्तुति कहिराइ
मै निज मति हित बिलास बिमजइ रोझिम रिझास चातकजी
चार्तकमेक स्वाती बुंद पाइ
जामयेक उठि सखा सुलवेर भुत दवार बेठो के ये कान्त राम मन्त्र करै भाई "

मध्य –[पृ० सं० ११] "सीत गाम का बीबीचो बेचो सपी सीय राम रीझाई
राम सीय रूप परि पुनि बीबीपी बेचारी आई
पीकदाम व दुइ सपी पुनी चावमन कराई
प॰ द दुर दोन करी पुनि भोजन करवाई १२"

अन्त—"सीत सीअ सेवा कहो करै पुनी पगु सतगुर सेव
प्रम उपच्यासक सो सही जो सेही जाने भेव ११
सेइ सदा सेवे सदा बीहान होय सुन सेऊ
अम्य साधनातर बीचोध बल धनम्य दृढ टेक १२
धसर सर्म सुर भावना पुमलन्य स्तुती सेती
दीनमे सत दोहा रचे मन समुझावन हेतु १३
सभे कृपा परे पार करे निति प्यार
कृपा जानकीनाथ जानकी कहे महल मनोहार १४
सदा प्रसाद प्रभुन कही अनादी
रसी बरनेहि रस कदी प्रकास बीघास
इती भावना प्रगतेदासजी संपूरन श्री रघुनन्दन की १"

विषय—राम-विषयक स्फुट कविता। प्रारम्भ के तीन जीर्ण तथा कीटविद्ध पत्रों में जीवन, ब्रह्म पुरुषत्तम गुरुभक्ति, सन्तपूजा, वेद-मान्यता, निराकार-भक्ति-मान्यता और राम-भक्ति तथा रामचरित-कथन के अभिप्राय के सम्बन्ध में विवेचन। बाद में सखियों द्वारा राम को जगाना, नृत्य वाद्य आदि का आयोजन और सीता का विवाहन। जेवनार और आतरव के बाद बिरह-क्रिया। फिर सखियों द्वारा नृत्य आदि प्रस्तुत करना। वन तथा मनोहारी वस्तुओं का वर्णन। ग्रन्थ के पठन पाठनादि का फल।

टिप्पणी १—यह ग्रन्थ कविवर रामसनेह द्वारा रचित है। प्रारम्भ के पृष्ठ खण्डित हैं। पूरा ग्रन्थ तीन भागों में विभक्त है। पृ० सं० १ से ५ तक

कवि ने भगवद्‌भजन के सम्बन्ध में अपने विचार दिये हैं। दूसरे भाग के बारह पृष्ठों में रामचरित्र पर स्फुट छन्द है। तीसरे भाग के पाँच पृष्ठों में रामचन्द्र तथा सीता का वाटिका-विहार वर्णित है।

२—ग्रन्थकार का कुछ नामोल्लेख-मात्र है। नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) की खोज-विवरणिकाओं के अनुसार इनकी जन्मभूमि जयपुर थी, साधु होकर अयोध्या में रहने लगे थे और कुछ दिन चित्रकूट में भी रहे थे। स० १८०४ वि० के लगभग वर्त्तमान थे। इनकी अन्य सात रचनाओं का पता चला है। मतान्तर से ग्रन्थकार अट्ठारहवीं शती के मध्य में विद्यमान थे। यह ग्रन्थ नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को भी खोज में मिला है। द्र० खो० वि० सवत १६०७, ग्र० स० ८०।

३—ग्रन्थ की लिपि प्राचीन और कैथी से प्रभावित है। प्रारम्भ के पृष्ठ खण्डित हैं तथा बीच के पृष्ठ कीटविद्ध हैं। यह ग्रन्थ श्रीअवधेन्द्रदेव नारायण (दहियावाँ, छपरा) के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

११७. नीति-शृङ्गार-शान्त-शतक—ग्रंथकार—मनोहरलाल। लिपिकार—×। अवस्था—अच्छी, पुराना कागज। पृ० सं०—६६। प्र० पृ० प० लगभग—१७। आकार—६"×६"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारम्भ—"बड़े-बड़े अभिमान कर खोय गये जग माहि ॥
महिरावण रावण सकल कौरव दीसत नाहि ॥४६॥
भयें अधिक अधिकारके यों मति कहियो मैं ॥
मरत अजा की खालसों कूट कहावत वैं ॥४७॥
दयो दई अधिकार तौ अहकार मनि लाइ ॥
अहकार में आ गयो फिर धिकार रहि जाइ ॥४८॥
कुटिल नरन में कुटिलता स्वान पूछसम जानि ॥
गडो रहे सौ बरष तक पूँछ न छोडै बानि ॥४९॥
जुआरी बिभचारी छली इनसों मति करि मोह ॥
सदा झूठ के पात्र ये करनों उचित बिछोह ॥५०॥"

मध्य—[पृ० सं० ३३] "अथ चित्रदर्शन ॥
छिनक छिनक हिय लाय तिय निरखि मित्र को चित्र ॥
चित्र लिखीसी है रही लखौ जु चित्रविचित्र ॥१२१॥
अथ प्रत्यक्षदर्शन ॥
लाखों लाज कुल छाडि अब बुरैं कहौ सब लोग ॥
दिना रैंन पियसामरो सदा निरखिवे जोग ॥१२२॥

(सं० १७१६ वि०) के समीप प्रतीत होता है। इनके सम्बन्ध में नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) से प्रकाशित 'हस्तलिखित हिन्दी-ग्रन्थों की खोज का पिछले पचास वर्षों का परिचयात्मक विवरण' की पृष्ठ-सं० ८१ और प्र० सं० ७७, २७६ तथा नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) से प्रकाशित 'हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का सन्निप्त विवरण' (पहला भाग) की पृष्ठ-सं० ११६ द्रष्टव्य है।

यह ग्रन्थ श्रीअवधेन्द्रदेव नारायण, दहियावाँ, छपरा (सारन) के सौजन्य से प्राप्त हुआ है।

११८ रामायण (सुन्दर काड) —ग्रन्थकार—तुलसीदास। लिपिकार—लाला शिवचरण। अवस्था—प्राचीन, देशी कागज, पूर्ण। पृ० सं०—३६। प्र० पृ० पं० लगभग—३६। आकार—६½"×७½"। भाषा—हिन्दी (अवधी)। लिपि—नागरी। रचना-काल—×। लिपिकाल—सं० १८७१ वि०, माघ-सुदी त्रयोदशी, रविवार।

प्रारम्भ —"श्रीगनेसजीवसहाऐ श्रीरामजीवसहाऐ श्रीहनुमानजीवसहाऐ
श्रीठाकुरजीवसहाऐ श्रीपोथीसुंदरकाडली .

दोहा—सुमीरी सीभु भवानी रामनामजो . .छ
हीरदेऐ कहो जोरी जुगपानी दीजे भगवती जो बीमलजस :

चौपाई—जामवत के वचन सुहा
सुनी हनुमान हीरदे अतीभा ..
तौलगी मोही परीखीहहु .
सहो दुग्व पदमुलफल खाइ"

मध्य—[पृ० सं० २५]

"चौपाइ—वेद पुरान स्रुती समधानी
कही बीभीखन नीती वखानी
सुनत दसानन उठा रीसाइ
खल तोही ग्रीतु नीकट चल आइ
जीअसी सटासठ मोर जीआवा
रीपुकर पछ्छुट तोही भावा
कहसी न खल असको जगमाही
भुजवल जाही जीत मैं नाही"

अन्त—"दोहा—सकल सुमगल दाऐक रघुनाऐक गुनगान
सादर सुनहीते भवतरही सीधु बीना जलजान
इतीस्री पोथी सुदरकाड सपुरन जो देखा सो लीखा मम
दोख न दीअते पढोत जन सो वीनती मोरी टुटल आखर
लेव सब जोरी समत १८७१ साल समे माघ सुदी

अन्त—"शुपारी शो पाए तो अजीरन जाए ॥३८॥
नीर गुडी शो पाए तो कोढ जाए ॥३६॥ रत्ती भर कश्य-
तुरी २॥ भर शहत शो पाए तो दुना भुप होए ॥४०॥
करकरा शो पाए तो नामर्द मर्द होए ॥४१॥ तमाम…
गर्वशीतजाए ॥ गुंगुल माशा १ शींगीरीक माशा २॥ गोंद
वबुलका माशा ४। अदरप के रश से गोली वनावे शरशो
प्रवान शोतजोर वाले को देवें चंगाहोए मजमुर्दे है"

विषय—पारा मारने की विधि, हरताल मारने की विधि, कुष्ठरोग-निवारण-विधि, ताँबा पकाने की विधि, राँगा मारने की विधि, जस्ता मारने की विधि, ताँबा-भस्म की तरकीब, जमालगोटा शोधने की विधि, सीसा शोधने की विधि, रक्तविकार का तेल, रक्तविकार का घी, रक्तविकार की दवा, सुनवहरी का यत्न, रसचिन्तामणि की गोली, सोहागवटी, रसपर्पटी आदि औषध के निर्माण तथा रोगोपचार की विधियाँ।

टिप्पणी—प्रारम्भ के चौअन पृष्ठ खण्डित हैं। अपूर्ण होने के कारण 'ग्रंथ-पुष्पिका' के अभाव में ग्रंथकार, लिपिकार और उनके समय, स्थान आदि का संकेत ग्रंथ में नहीं है। ग्रंथ की लिपि अस्पष्ट और पुरानी है। 'ख' के लिए 'प' और 'य' के लिए नीचे बिन्दु देकर 'य', 'स' के लिए 'श' तथा 'ज' के लिए केवल 'य' का प्रयोग लिपिकार ने किया है। यह ग्रंथ मुँगेर-जिलान्तर्गत बरबीघा (शेखपुरा) ग्रामवासी श्रीशंकरप्रसाद 'आर्य' के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

१२०. वन-यात्रा—ग्रंथकार—×। लिपिकार—×। अवस्था—अच्छी, प्राचीन, देशी कागज। पृ० सं० ७६। प्र० पृ० पं०—लगभग २२। आकार—६"×५½"। भाषा—हिन्दी (व्रज)। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारम्भ—"श्री कृष्णाय नमः श्री गोपीजनवल्लभाय नमः।
अथ वन यात्रा परिक्रमा व्रज चौरासी कोस की लिख्यते।
प्रथम श्री गोशाई जी करी सो श्री गोशाई जी अपने सवन सो कहत हैं
श्री गोशाइ जी
श्री सवत १६०० भाद्रपद वदी १२ द्वादशी को सैन आरती करिके पीछे
श्री गोशाईजी मथुरा जी को पधारे व्रज की परिक्रमा करिवे को सो तहा
प्रथम श्री मथुराजी में श्रीकृष्णजी को प्रागटा भयो है तहाँ कारागह की
ठौर है तहाँ श्री मथुरा जी में विश्राम घाट है तहाँ कस को मारि कै
श्रीकृष्ण ने विश्राम कियो है "

मध्य—[पृ० सं० ३८]
"यह कीटवन की लीला है ताके आगे खीर सागर सेषसाई हैं तहाँ व्रज
भक्तनने श्री ठाकुर जी सो कह्यो जी सीर सागर में श्री लक्ष्मीनारायण

चौन प्रकार तपस्या करत हैं सो हमको दिखावो भए श्री बलदेवजी तो शेषरूपभये तिनकी सिज्या करत भाए चतुर्भुज स्वरूप भये के शंखचक्र गदा मस्तकके पीछे नाभि कमल मेरे ब्रह्मा आदि देखावे तब देवता भावसों स्तुति करन लागे "

अन्त—"श्री गोसाईंजी की बैठक ब्रज में ॥१॥
श्रीकुंड पै १ रासोली मे २ गोपालपुर में ३ सुरभी कुंड पै ४ परासोली ५ संकेतवट पै ६ डीगली पै ७ मानकसिला पै ८ श्री गोकुलजी में ९ ब्रज में कुंड ८४ विमल कुंड १ धर्म कुंड २ यज्ञ कुंड ३ पंचतीर्थ कुंड ४ मनकर्णिका कुंड ५ पयोद कुंड ६ निवास कुंड ७ लंका कुंड ८ मनकामना कुंड ९ स्वेतबंध रामेश्वर कुंड १० महोदधि कुंड ११ क्षीरसागर कुंड १२ जलविहार कुंड १३ माप कुंड १४ पुस्कर कुंड १५ द्वारिका कुंड १६ गोपराना कुंड १७ गोपी कुंड १८ किशोरी कुंड १९ मोती कुंड २० नृसिंह कुंड २१ सारस्वती कुंड २२ परमदारा कुंड २३ अभिमत कुंड २४ रुद्र कुंड २५ सुकरा कुंड २६ गुलाल कुंड २७ संकेत कुंड २८ सुरभी कुंड २९ शीतल कुंड ३० रंगीलो कुंड ३१ छबीलो कुंड ३२ रसीलो कुंड ३३ हठीलो कुंड ३४ संत कुंड ३५ सूर्य कुंड ३६ विसाखा कुंड ३७ विश्राम कुंड ३८ भोग कुंड ३९ संकर्षण कुंड ४० मानसी कुंड ४१ पार्वती कुंड ८२ गरुड़ कुंड ८३ मकरध्वज कुंड ८४ ॥ इतिश्री बनयात्रा परिक्रमा ब्रजचौरासी कोस की संपूर्णम् ॥"

विषय—मथुरा-परिक्रमा मधुबन, कामोद-बन, बहुला-बन बसाई ग्राम, गोपालकुंड बरसाने क्षीर-सागर कुम बेलि भूपक-बन सबई ग्राम, गरुड़गोविन्द ग्राम सोसद-बन, दुरिया का खेरा और महाबन का वर्णन तथा विस्तृत विवरण।

टिप्पणी—यह ग्रन्थ प्राचीन पोथी (मस्तराघर) में है। ग्रन्थ की लिपि-शैली प्राचीन है। प्रारम्भ या अन्त में ग्रन्थकार और लिपिकार का नामोल्लेख नहीं है। ग्रन्थ में स्थान-स्थान पर चित्र भी दिये हुए हैं, जो ब्रज के विशेष स्थानों ग्रामों, वनों आदि के प्रतीक होते हैं। ग्रन्थ में मथुरा तथा उसके आस-पास के विविध स्थलों की विस्तृत सूचना संकलित है।

यह ग्रन्थ श्रीयदुवंशेन्द्रदेव नारायण, हरिवाहाँ, छपरा (सारन) के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

१२१ रामचरित-मानस (सटीक)—ग्रन्थकार—गोस्वामी तुलसीदास। टीकाकार—शुकदेव। लिपिकार—रामबिहारी शुक्ल। अवस्था—पुराना कागज खीणा-जुगुल। पृ० सं०—११७ (पत्र)। प्र० पृ० पं० लगभग—१३। आकार—७½" × १३"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल— × । लिपि-काल—सन् १८८७ ई०।

प्रारम्भ—"(भूमिका) श्रीमते रामानुजायनम. ॥ अथ मंगलाचरण लिख्यते ॥

जयति रघुवंशतिलक कौशल्याहृदयनंदनो राम ।
दशवदननिधनकारी दाशरथि पुण्डरीकाक्ष ॥
दूर्वादलद्युतितनुं तरुणाब्जनेत्र हेमाम्बरं वरविभूषणभूषिताङ्गम् ।
कन्दर्पकोटिकमनीयकिशोरमूर्त्ति पूर्त्तिमनोरथभवां भज जानकीशम् ॥

(मूलग्रन्थ) यन्मायावशवर्त्तिविश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवा. सुरा
यत्सत्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः ।
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां
वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम् ॥६॥

नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि ॥
स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथगाथाभाषानिबन्धमतिमंजुलमातनोति ॥
॥ सोरठा ॥ जेहि सुमिरत सिधि होइ गणनायक करिवरवदन ।
करहु अनुग्रह सोइ बुद्धिराशि शुभगुण सदन ॥१॥

"(टीका) इस छठे श्लोक में तुलसीदास अपने इष्टदेव श्रीरामचन्द्र को उनका परात्परत्व, सर्व्वेश्वरत्व, जगत्कारणत्व, बन्धमोक्षप्रदत्व और सत्वस्व दर्शाते हुए अभिवन्दन करते हैं जिस ईश्वर की प्रबल माया के वशवर्त्ती हैं ब्रह्मा, रुद्र इत्यादि समस्त देव और दानव और अखिल विश्व जैसा कहा है ॥"

मध्य—(पृ० सं० ३२५)—"चौपाई—सुनि मुनि वचन भरत हिय शोचू ।
भयउ कुअवसर कठिन सकोचू १
जानि गरुइ गु॰ गिरा बहोरी । चरण वन्दि बोले कर जोरी २
शिरधरि आयसु करिय तुम्हारा । परमधर्म यह नाथ हमारा ३
भरत वचन मुनिवर मन भाये । शुचि सेवक सब निकट बुलाये ४

"(टीका) ऐसे भरद्वाज मुनि के वचन सुनते ही भरत के हृदय में बड़ा शोच हुआ कि यह तो इस कुसमय में कठिन सकोच हुआ १ फिरि बड़ों की आज्ञा को गरुई जानि उनके चरणों को प्रणाम करके बोले २ आपकी आज्ञा को माथे मानिकर कीजिये यही हमारा परम धर्म्म है ३ भरत के वचन सुनिकर भरद्वाज ने सेवकों को बुलाया और कहा ४"

अन्त—"॥ दो० ॥ मो समदीन न दीन हित तुम समान रघुवीर ।
अस विचारि रघुवंशमणि हरहु विपम भवभीर ॥
कामिहिं नारि पियारि जिमि लोभिहिं प्रिय जिमिदाम ।
तिमि रघुनाथ निरन्तर प्रिय लागहुँ मोहिं राम ॥५० ॥

"(टीका) अब गुसाईं जी अपने जो दीनतादि सम्बन्ध रामस्वामी से हैं सो दरशाते हुए प्रार्थना करते है कि रघुवीर स्वामी मेरे समान तो इस ससार में दीन नहीं है और आपके समान कोई दीन हितकारी नहीं है इसी प्रकार और अनेक सम्बन्ध⋯विचारि करि हे रघुवंश मणि इस महादुस्सह जन्म जरामरण भवभीर को हरिये ॥ ⋯ यह उत्तर काण्ड

प्रवर्त्तन किया। इन्होंने अपने नाम के पीछे 'सखी' शब्द का प्रयोग किया है। वे एक पद्य में लिखते हैं—

'लछिमी सखी धरु भेष जनाना। चलु भजु पार ब्रह्म भगवाना।'

इनकी रचना में इसी प्रकार आत्मा-परमात्मा के स्वरूप का विवेचन है। इनका रचना-काल स० १९६६ वि० है। इनके पंथ के प्रधान उत्तराधिकारी कामतासखीजी छपरा-कचहरी स्टेशन (उत्तर-पूर्वी रेलवे) के निकटस्थ बगीचे में स्थित सखी-मठ में निवास करते हैं। इनकी रचना में कहीं-कहीं कबीर से भी अधिक कठोर, उद्धत एवं अश्लील शब्दों का प्रयोग हुआ है।

यह ग्रन्थ बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् (पटना) की ओर से की गई मूलग्रन्थ की प्रतिलिपि है। सखी-मत के वर्त्तमान महन्थ कामतासखी के सौजन्य से यह ग्रन्थ प्राप्त हुआ।

१२३. नाममाला—ग्रन्थकार—नंददास। लिपिकार—जयनंदनसिंह। अवस्था—पुराना मोटा देशी कागज। पृ० स०—१५। प्र० पृ० पं० लगभग—५६। आकार—८"×११"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—ज्येष्ठ शुक्ला दशमी, स० १९४१ वि०, शनिवार।

प्रारम्भ—"श्री गनेसाऐनमह अथ मानमंजरी भाषानाम माला

दोहा—उनमामीपद परमगुर कीश्नु कमल दल नैंन
जग कारन करुनारनव गोकुल काको श्रैंन १
उचरी सकत नहीं संसक्रीत जानेवो चाहत नाम
तीनलगीनद सुमतीजथा रचतनामकीदाम २
गुँथीन नाना नाम को अमरकोष के भाई
मांनवती के मान पर मीले अर्थ सब आई"

मध्य—(पृ० स० ७) "दुर्गानाम। उमा। अप्रना। ईस्वरी। गौरी। गौरीजा। होई।
काली। कुंडी अंबीका सीवा। भवानी। सोई।
... . ।
मा आजेही आधारजगवीश्तारत है भांम ॥"

अन्त—"जुगल नाम। जुगल जुगमजुग दोद दोय उभय मीथुन वी वी वीश्र।
जुगल कीसोर वसौ सदानददास के हीश्र ॥

ऐतीश्रीनानमाला जुगलकीसोर प्रेमनीरूपननददासक्रीत मानमंजरी संपुरनसमापतह जो देखासोलीखम्मदुखन नेदीश्रतेदसखत श्री जैनदनसीघ शंवत १९४१ शाल जेठ सुदी दशमी रोज सनीवार दोघरी दीन वाकी रहा था तीशवखत तईआर भेआ श्री राम जै राम जै जै राम।"

विषय—शब्द-कोष।

टिप्पणी १—इस ग्रन्थ का नाम 'मानमंजरी' भी है। इसकी प्रति नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को भी खोज में मिली है, दे० खो० वि० १९०२, प्र० सं० २०९; खो०

यह मान चरित पवित्र हरि को प्रेम सहित जु गावहीं ॥
करहिं आदर मान तिनको संतजन सुख पावहीं ॥
राधा रसिक गोपाल को कौतूहल रसकेलि ॥
वृजवासी प्रभुजनन कों सुखद कामतरु वेलि ॥
सुफल जनम है तास जे अनुदित गावत सुनत ॥
तिनको सदा हुलास सूरदास प्रभु की कृपा ॥

इतिश्री कृष्णानन्द व्यास देवरागसागरोद्भव सूरसागर राग कल्पद्रुम रासलीला सपूरन ॥"

विपय—सूर-साहित्य।

टिप्पणी—(क) व्रजभाषा के सुप्रसिद्ध कवि, वल्लभ-सम्प्रदाय के वैष्णव भक्त और अष्टछाप के कवियों में प्रमुख श्रीसूरदासजी के पदों का सग्रह। हस्तलेख में ग्रन्थ का पूरा नाम है—'सूरसागर रागलीला कल्पद्रुम।' ग्रन्थ मुख्यतः (१. विनयपत्रिका रागकल्पद्रुम', २. 'दानलीला कल्पद्रुम', ३. 'अनुरागलीला कल्पद्रुम', ४ 'रागलीला कल्पद्रुम', ५. 'मुरलीलीला कल्पद्रुम', और ६. 'रासलीला कल्पद्रुम') छह खण्डों (शीर्पकों) में विभक्त है। अन्य प्रतियों से इसमें कई स्थलों पर पाठभेद है।

(ख) ग्रथ की लिपि पुरानी और अस्पष्ट है। लिपिकार ने अपने नाम तथा लिपिकाल का सकेत नहीं किया है।

(ग) इसके और भी हस्तलेख परिपद्-संग्रहालय को प्राप्त हुए हैं। विवरण के लिए दे० प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण, खड १, ग्रं० स० ८१ और खड २, ग्रं० स० ३६ और ८०। विशेप विवरण के लिए बिहार-राष्ट्रभाषा-परिपद् से प्रकाशित विवरण के दूसरे खंड के 'ग्रथकारों का संक्षिप्त परिचय' की सोलहवीं क्रम-सख्या द्रष्टव्य।

यह ग्रथ श्रीनागेश्वरप्रसाद नगीना, दरियापुर, नवादा (गया) के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

१२५ लघु-रस-कलिका—ग्रन्थकार—ललितकिशोरी। लिपिकार—कुन्दनलाल। अवस्था—अच्छी, लीथो-मुद्रण। पृ० स०—५६४। प्र० पृ० प० लगभग—२१। आकार—६$\frac{1}{4}$" × १०"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी, कैथी-लिपि का यत्र-तत्र प्रयोग। रचनाकाल—वैशाख शु० त्रयोदशी, स० १९१३ वि०। लिपि-काल—सं० १९३५ वि०।

प्रारम्भ—"श्री राधारमणचरणकमलेभ्योनमः श्रीकृष्ण चैतन्यपाद पद्मेभ्यो नम·
अथ लघुरस कलिका ललित किशोरी विरचिते लिख्यते पद रागसहाना
नमो नमो श्री शची किशोर अथ यो रासविलास प्रेमरस उदैकियो
करुना की कोर वलि वृंदावन चद्र प्रकरयो पतितन अन्ध हिये वरजोर ॥
ललित किशोरी मोसी कुटिलै दीनों सरवस विना निहोर ॥१॥

धामे उनके नित्य निज सेव्य श्री राधारमणजी विराजे महोत्सव बड़े उत्साहसों कियो ललित निकुंज मन्दिर को नाम धरायो ता पीछे कार्त्तिक शुक्ल २ संवत् १९३० को दिवस राधेश्याम नाम सकीर्तन धुनि आनन्द में साह कुन्दनलाल ने श्री वृन्दावन नित्य निकुंज निवास पायो उन्होंने जो पुस्तक रचना करी वाको नाम रसकलिका है वाही में से साह कुन्दनलाल उनके लघुभ्राता ने समय समय के थोड़े थोड़े पद और कोई कोई लीला संयुक्त करि के यह पुस्तक बनाई यासों लघुरस कलिका याको नाम रख्यौ ॥"

(२) ग्रन्थ दोहे-चौपाइयों तथा विविध छन्दों और अनेक गेय रागों में रचित है। काव्य की दृष्टिकोण से रचना उत्तम और हृद्य है। उदाहरणार्थ—

"लटकी लट तिय भालपै भृकुटी वक विशाल।
बिन जिह काम कमान पै बान मनोहर लाल ॥"

इसी प्रकार खम्माच राग में—

"भृकुटिन की कुटिलाई नीकी। पलकन की अलि अनियाँ नीकी
लोचन ललित वकाई नीकी ॥
मृदु मुसक्यान कटरिदा अलकैं नागिनिया लहिराई नीकी।
ललित किशोरी गरेलागि पीसब निशिजाग जगाई नीकी ॥५३२॥"

राग जिला झमौटी—

"चन्द से कपोल गोल चपला से गढ लोल अलकैं निचोल अली अवली परविंद की ॥
खजन से नैनरेख अजन दुऊकोर नमन रजन चिबुबिंदु श्याम शोभा गोविंद की ॥
ललित किशोरी कटि छीन नाभि कुंड रूप रोमावलि उठो तापै पकति मलिंद की ॥
गुल्फ की गुलाई शरदिंदुहू न पाई सकुचाई अरुनाई लखिलाली अरविंद की ॥"

ललितजी की भ्रमणशीलता की छाप इनकी भाषा पर है। ब्रजभाषा-प्रधान इस काव्य में स्थान-स्थान पर अन्य क्षेत्रीय बोलियों के भी नात्यधिक शब्द आये हैं।

बिहार-आर्य-प्रतिनिधि-सभा-भवन (पटना)-निवासी श्रीपरमानन्द आर्य के सौजन्य से यह ग्रन्थ प्राप्त हुआ है।

१२६. सुरप्रकाश—ग्रन्थकार—बच्चू मल्लिक। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन देशी कागज। पृ० स०—३४५। प्र० पृ० प० लगभग—२०। आकार—$11'' \times 8\frac{1}{7}''$। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारम्भ—"श्री गणेशायनम. ॥ श्री स्वरस्वतैनम. ॥ श्री शंकरायनम ॥
श्री रामायनम ॥ श्री गुजायनम. ॥

दाताजानहुगजमुपेनितप्रनवोमहिमाहि ॥ सुमिरतगणपतिहीविभोप्रासिहोहिंछुनमाहि ॥
प्रासिहोहिंछुनमाहिविनायकतनपरकामा ॥ एकदसनसुरवरनदेईगरिमासुपधामा ॥
सूपकरनवसिकरनविघ्नहरलघिमाधाता ॥ अणिमादेहेरम्बइष्टलम्बोदरदाता ॥१॥
वानीजूकेदरसवंयजारौवुद्धिनसाय ॥ सजे नीलपटसारदापद्मआसनाभाय ॥
पद्मआसनाभायमहापद्मजकेनारी ॥ कठसेपसेगामुकुंदगुनविनहिधारी ॥
कुंदकलीरदगिराभारतीमकरसआनी ॥ कुछप्रगटेरसस्वंतीत्यौकरवानी ॥२॥"

मध्य—(पृ० सं० १७३)—

"चौपाइ ॥ यह हिय कथा कहे हम गाई ॥ अब गिरिचरित सुनो नृपराई ॥
पैकसमैहिरनावर्तईता ॥ तीनो लोकनि के सुर बीता ॥
ममोगिरसब निमबोरा ॥ प्रविधिपताननीरतनबोरा ॥
मर्महिपमहृबसमनमगाई ॥ तेहि भैमसुरनिजमनमनाई ॥
मधुरमतापवैपिवाराहु ॥ हमिरिसुईप्रहिदीनरचमु ॥
तहपरजुतगिरिरविससिझोपे ॥ तमनिहारिसुरपउरिमकोपे ॥

अन्त— 'मधुमकमसुरपुरसुपपाऊ ॥ पेसुबिनैनृपमोचिरमाऊ ॥
मसकहिजमसत्यभानम्मार्ई ॥ सापिविभवरदवहरपाई ॥
मप्रहरसनतिकैहोमाऊ ॥ मायमसुपसोसुबरभाऊ ॥
तिमितपिसुसतसुतगृहमार् ॥ ससुरमंपदिगजहुनिवरार् ॥
मममपामपरीवैपतिमेहा ॥ पामोसरमनिमोजतनेहा ॥
मंतवहीरउहितगोलोक ॥ पेक्रमकहिसुमिहोपमसोक ॥"

विषय—दोहे-चौपाइयों में श्रीमद्भागवत की कथा और सगुण, निर्गुण भक्ति, प्रणव आदि का निरूपण एवं विविध भक्ति-भावनाओं का महिमा-वर्णन।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता संगीतज्ञ श्रीबन्धु मल्लिकजी बिहार के शाहाबाद जिलान्तर्गत विक्रमगंज के निकटस्थ बगगाढ़ ग्राम-निवासी थे। ये प्रसिद्ध संगीतज्ञ श्रीगमारंगजी के परिवार के थे और डुमराँव-महाराज के आश्रित थे। इन्होंने इस ग्रन्थ के अतिरिक्त 'रस-प्रकाश' और 'कृष्ण-रामायण' की रचना की थी। उक्त दोनों ग्रन्थ भी परिषद् संग्रहालय में सुरक्षित हैं। इनकी रचना में रस, अलंकार तथा विविध छन्दों की विशेषता तो है ही, संगीत के श्रुतिमधुर बोलों तथा स्वर-प्रतीकों का वैचित्र्य-वैशिष्ट्य भी है। प्रस्तुत रचना में कवि ने भागवत के आधार पर श्रीकृष्ण के जीवन पर मनोरम पद लिखे हैं। यह *प्रबन्ध-ग्रन्थ हय* है। इसमें भोजपुरी के *शब्दों का प्रयोग-बाहुल्य* है। ग्रन्थ की लिपि पुरानी है। ग्रंथ के प्रारम्भ या अन्त में रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख नहीं है।

यह ग्रंथ बगगाईं, सूबपुरा (शाहाबाद)-निवासी श्री महदेव दूबे के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

१२० रामायण (बालकांड)—ग्रंथकार—गो० तुलसीदास। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन देशी कागज और खण्डित। पृ० सं०—१५१। प्र० पृ० पं० लगभग—११। आकार—८$\frac{4}{5}$"×५$\frac{1}{4}$"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारम्भ—"ओधीमकामदाहिवेवाऐ परहितहानीलामजीनकेरे
हरीहरजससाकैसरासुसे ॥ परमधामरमसहसपाहसे

जैपदोपदहहीमहमारी परहिमीवजीनकेमनमारी

....

....................अघग्रवगुनपनधनीकधनेमा

बर्दैकेतुसमहितमपहीके कुंभकरनसममोवतनीके

परमकाजलगोतनपरिहरही जीमीहोमीउपलर्मोपीदलगवहो"

मध्य—(सं० पृ० ७६)—

"दोहा ॥ पोलेमीपानीधान तप ग्रतीप्रमन्यमोहीजानी

मागहुबरजोभावमन महादानीपनुमानी"

अन्त— "तदपीजाइतुमकहुप्रस जथावंसवेवहार

सुदीवीप्रगुलपधुगुरु वेदवीदीतग्राचार"

विषय—रामचरितमानस के बालकांड की राम-कथा।

टिप्पणी—गोस्वामी तुलसीदास की प्रसिद्ध रामायण के बालकांड की खंडित प्रति। आदि (प्रारम्भ के तीन पृष्ठ) और अन्त खण्डित। लिपि-काल का उल्लेख नहीं है। लिपि-शैली प्राचीन है। यह ग्रंथ दरियापुर (नवादा-गया)-निवासी श्रीनागेश्वरप्रसाद 'नगीना' के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

१२८. रत्नसागर—ग्रंथकार—गुरुप्रसाद। लिपिकार—लाला वृन्दावन। अवस्था प्राचीन, हाथ का बना देशी कागज। पृ० सं०—२२०। प्र० पृ० प० लगभग—३२। आकार—१३" × ६"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—सं० १८६७ वि०।

प्रारम्भ—"पोजेतवदेसकलहीसुनिपैकुंवरसुजान

सिंघरपकनौसतहैपेमनगरसुस्थान १४

सहाराजकरतौसदाछत्रपतीसिरमौर

परजासगरीचैनसौसुसीरहततिहिठौर १५

इकदिनसपनैतपतपैचैठोहोवहभूप

आयौतपतिगिराजकेमानसपेकप्ननूप १६

कहौरानायासौतनैयहचित्तसपनेलाव

तैदेपेजेतेनगरतिनकीकथासुनाव १७

तवचानैउतिरदियौसुनयहचित्तदैभूप

रूपनगरसपतैसरसदेपाऐकसरूप १८'

मध्य—(पृ० सं० ११०)—

"झिमितिमिकरपौवौरितैकाटैः

रूबपावसमाइीसपीकैसैवचैदि

सरमाबाचकपर्मसोहोइहुलजिहिदीर
रुपमाबाचकपमहुरमापतकमसहीर ६६
सोमुरबपकैनालुमपिरहींविकसमहिोइ
चहिमिहिरीबकेसगैकठिनाहीचित्तपोइ १०"

अन्त—"मान के समानरोपुमाविकुमयारखासमुककेसमानममपूरबलगाइये
सोमकेसमानममिमुलकमिनकेमंगुसीमुगादिसदकिनबराइये"

विषय—नायक-नायिका-वर्णन के साथ कथा के माध्यम से काव्य के लक्षणों का सोदाहरण वर्णन। रसों की व्याप्ति, गुण और उनकी पहचान आदि का निरूपण।

टिप्पणी १—यह ग्रन्थ प्रेमनगर के राजा और उनके पास यकायक आनेवाले हंस (मानस) की कथा, हंस के द्वारा की गई विभिन्न देशों की भ्रमण-चर्चा और उन-उन देशों में प्रचलित अनेक परम्पराओं के वर्णन के अतिरिक्त अनेक प्रमाख्यानों से भी युक्त है। इसमें नायिका-भेद सोदाहरण वर्णित हुआ है। विविध रसों के लक्षण उनकी पहचान तथा उनके प्रभाव की भी विशद चर्चा ग्रन्थ में हुई है। ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण तथा अनुसन्धेय है। प्रारम्भ का एक पृष्ठ (तेरह पद) अप्राप्त है। ग्रन्थान्त के पाँच पृष्ठ कीटविद्ध और दुष्पाठ्य हैं। ग्रन्थ का लिपिकाल सं० १८६० वि० है।

२—यह पोथी नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को भी खोज में मिली है। नागरी-प्रचारिणी सभा के खोज-विवरण के अनुसार यह कवि सं० १७५५ वि० के लगभग वर्तमान थे; द० खो० वि० १६०५ वि , ग्रं सं० ९५; खो० वि० १६०६—१९ ८ वि०, ग्रं० सं० ६२६। सभा की प्रति से यह पोथी प्राचीन है। सभा के विवरण में उल्लिखित पोथी का लिपिकाल सं० १९६० वि० है, जब कि परिषद् की प्रति का लिपिकाल है सं० १८६० वि०।

३—सभा के खोज-विवरण में ग्रन्थकार की दूसरी रचना भी मिली है—'कवि-विनोद' और वैद्यक-सार, जिसका रचनाकाल है सं० १७४५ : १६८८ ई०, और लिपिकाल है सं० १८३१ १८६७ ई०; दे० खो० वि० १९२६—३१ ई० की पृ सं० ४० और रचयिता-सं० १३६ की टिप्पणी। उक्त विवरण मे कवि के स्थान आदि का संकेत नहीं मिलता है।

ग्रन्थ की लिपि पुरानी है। यह ग्रन्थ नयाटोला पटना-निवासी श्रीलक्ष्मीप्रसाद रामचन्द्रप्रसाद के सौजन्य से प्राप्त हुआ है।

१२६. रामचरितमानस (मात्र अयोध्याकांड)—ग्रंथकार—तुलसीदास। लिपिकार—×। प्राचीन हाथ का बना देशी कागज। पृ सं० ३०७। प्र० पृ० पं० लगभग—६६। आकार—८$\frac{1}{2}$"×४" । भाषा—हिन्दी (अवधी)। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारंभ—"होयहरषेममारीतन मंगलमदनमुदाम
बहुबीचीतमहीमर्सीतबपोकेमोंमगवान १००

अन्त—"श्रीमसीतारामचीकरमीकरनरामप्रभुतुलसीकहा
रघुवीरचरीतअपारवारीपारकवीकवनेकहा
इपवी रम्याहककुहमंगलप्रभुमीभोसादरगावही
वैदेहीरामभ्रअपसेहजनगवरामुकरावही

सोरठा ॥ सीमरघुवीरचीवादलोसप्रेमगावहीसुवही
ताकासदाकषाह मंगलापवनरामजस"

इती श्री रामचरीत्रमानसे सकल कलीकलुषवीधंसीनो नाम बालकांडसमापत संपुरन समापत को देला सो बीय्या ममदोलवहीमते पंडित जनसीचीनती मोरदुलहबहर चैतबदमोतिसमत १८५८ सालसमैमाससी: जेठ बदी दुहजी २ वार वीहसपतीके वीला देमारमहलमोकाम साहाबाद ॥ पायी लमकल सीमकैपगनानमेरीगावसाहीपुरकैवसीन्हा सन १२०८ साल।"

टिप्पणी—गोस्वामी तुलसीदास-विरचित रामायण के इस हस्तलेख में प्रकाशित प्रतियों से पाठभेद है। लिपि पुरानी और अस्पष्ट है।

यह ग्रंथ चरित्रवारपुर विक्रम (पटना जिला)-निवासी श्री० बा० शिवरत्नप्रसादसिंह के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

१३१ अनेकार्थ-मंजरी—ग्रन्थकार—नन्ददास। लिपिकार—जैमन्गल सिंह (मधुरापुर)। अवस्था—अच्छी पूर्ण, पुराना देशी कागज। पृ० सं०—७। प्र० पृ० पं० लगभग—१६। आकार—८"×१०½"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—आषाढ़ शुक्ल नवमी, मृगुवार १८९१ वि०।

प्रारम्भ—"श्री गनेसायेनमह श्री अर्थमंजरी अनेकार्थ
दोहा—जो प्रभु जोती जगत मे कारनकरन अभेव।
वीघनहरन सब सुभकरन नमोनमोतहि देव॥
एकैवस्तु अनेक है जगमगात जगधाम।
जघोकंचनते कीकनी कंकन कुंडलनाम॥
बची सकलनदी संसकीत अरसमुक्तअरसमर्थ।
तीनहीतयेंह सुमतीअसा माला अनेका अर्थ॥"

मध्य—(पृ० सं० ४)—अर्णवनाम
"गगन अनंत जा ब्रह्मकी बहुरी अनंत अनेक।
सेस अनंतही कहत है हरी अनेक मह मेक॥"

अन्त—"अनेकनाम लेस समेह सवेह प्रीत बहुरो प्रेम सनेह।
सो नंदचरनकी गौरी चरन नंददास को देह॥
जो इ अनेका आर्थकी पढै गुनै नर कोई।
ताको अनेक आर्थ ये मह परमारथ होई॥"

ऐसीसो अनेका थार्य नन्ददासकीत समपुरन समाप्तहजोदेषा सो लीखतमदोपनदोश्रते संवत १६४१ साल ममेनाम आषाढ़ सुदी सप्तमी श्रीगुरुवासरे दीन गतऐकप्रहर दसखतजैनदनसींघ ग्रा० मथुरापुर।

विषय—पर्यायवाची कोष।

टिप्पणी—प्रसिद्ध नन्ददास-रचित अनेकार्थध्वनिमंजरी का यह एक भाग है। यह ग्रन्थ 'नाममाला' कहा जाता है। 'मानमंजरी नाममाला' नामक इनकी रचना भी खोज में मिली है। इनकी रचना के हस्तलेख पहले भी परिषद् को प्राप्त हुए हैं और उसके संग्रहालय में सुरक्षित हैं। विवरण के लिए दे० बि० रा० भा० प० से प्रकाशित 'प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण' (पहला खण्ड)—पृ० ७ और ८, दे० बि० रा० भा० प० से प्रकाशित 'प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण' (दूसरा खण्ड)—पृ० ६ और कवि-सं० ८८ तथा १२४। नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को भी इनके ग्रन्थ अनेक हस्तलेख खोज में मिले हैं। दे० 'हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण' पहला भाग, पृ० ७३। लिपि पुरानी कैथी है।

यह ग्रन्थ अख्तियारपुर, सिकम (पटना जिला)-निवासी श्रीशिवरत्नप्रसादसिंह के सौजन्य से, मित्र पुस्तकालय के संग्रह से प्राप्त हुआ है।

१३२. वैतालपचीसी—ग्रन्थकार—सूरत। लिपिकार—गणेशदास। अवस्था—अच्छी, पूर्ण। पृ० सं०—६३। प्र० पृ० पं० लगभग—२७। आकार ६$\frac{1}{8}$"×१०"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—महमदशाह और सवाई जैसिंह का समय। लिपिकाल—सं० १६१६ वि०।

प्रारम्भ—"वैतालपचीसी ग्रंथ प्रारंभ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ शुरू की कहानी का यह है प्रथम ॥
कि धारा नगरनाम एक शहर वहाँ का राजा गन्धर्वसेन उसकी चार राणीयां थीं उनमें छः बेटे थे एक से एक पण्डित और जोरावर थे। कजाकार यादचढ़ रोजके वह राजा मर गया और उसकी जगह बड़ा शषनाम राजा हुआ फिर कितने दिनों के पीछे उसका छोटा भाई विक्रम बड़े भाई को मारकर आप राजा हुआ और वाखुवी राज करने लगा दिन वा दिन उसका राज ऐसा बढ़ा कितमाम जम्बुद्वीप का राजा हुआ और अचल राज करके सांका बांधा कितने दिनों के बाद राजा ने यह अपने दिलमें विचारा की जिन मुल्कों का नाम मैं शुन्ता हूँ उनकी सैर किया चाहिए यह अपने दिल में ठानि राजा गद्दी अपने छोटे भाई भरथरी कों सौंप आप जोगी बन मुल्क २ की सैर करने लगा"

मध्य—(पृ० सं० ५५) "यह योगी माघ के पाँचवें दिन मेरी शादी होगी तो पहिले मैं तुमसे मिल आऊँगी पीछे अपने शौहर के यहाँ रहोंगी यह वचन दे सौगंद ला वह अपने घर को गई और वह अपने घर आया गरज पाँचवें दिन उसकी शादी हुई खाविन्द उसका ब्याह कर उसे अपने घर ले आया"

अन्त—यह सुन योगी ने ज्योंही दण्डवत करने को सिर झुकाया त्योंही राजा ने एक खड्ग मारा कि सिर जुदा हो गया और बैताल ने आन फूलों का मेंह बरसाय ऐसा कहा है कि जो अपने ताईं मारा चाहे उसे मारने से अधम नहीं उसमें राजा का साहस देख इंद्र समेत सब देवता अपने २ विमानों पर बैठ वहाँ जैजैकार देने लगे और राजा इंद्र ने प्रसन्न हो राजा वीर विक्रमाजीत से कहा कि वर माँग तब राजा ने हाथ जोड़ कर कहा महाराज यह कथा मेरी संसार में प्रसिद्ध हो इंद्र ने कहा कि जब तक चंद्रा सूरज पृथ्वी आकास स्थिर है तब तक यह कथा तेरी प्रसिद्ध रहेगी और तू सब भूमि का राजा होगा इतना कह राजा इंद्र अपने स्थान को गया और राजा ने उन दोनों लोथों को ले उस तेल के कड़ाई में डाल दिया तब दोनो वीर आ हाजिर हुए और कहने लगे कि हमें क्या आज्ञा राजा ने कहा जब मैं याद करूं तब तुम आना इस तरह से उनसे वचन ले राजा अपने घर आया राज करने लगा ऐसा कहा है कि पंडित हो या मूरख या लड़का हो या जवान जो बुद्धिमान होगा उसी की जीत होगी २५ इति बैतालपचीसी-समाप्तम् शुभम् भूयात।"

विषय—विक्रम से बैताल द्वारा पचीस कहानियों का कथन और विक्रम की प्रशंसा।

टिप्पणी—प्राचीन हिन्दी गद्य साहित्य का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ। संस्कृत 'वेताल-पंचविंशति' के आधार पर रचित प्रस्तुत कथा-साहित्य के प्रारम्भ की निम्नलिखित पंक्तियाँ कवि सूरत के समय का संकेत देती हैं—

"इब्तिदाय दास्तान यों है कि मुहम्मदशाह बादशाह के जमाने में राजा जैसिंह सवाई ने जो मालिक जैनगर का था सूरत नाम कवीश्वर से कहा की बैतालपचीसी को जो बजबान संस्कृत में है तुम ब्रजभाखा में कहो तब उसने बमूजिब हुक्म राजा के ब्रज की बोली में कही सो अब उसको जबान उर्दू में लाया करते हैं जो खास आम के समझने में आवे।" इससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि ग्रन्थ-रचना का समय सवाई जयसिंह का राज्यकाल (अठारहवीं सदी) है। लिपि पुरानी; जीर्ण-शुद्धप्राय। उपलब्ध बैतालपचीसी में यह ग्रंथ और ग्रंथकार नवीन है।

यह ग्रंथ अख्तियारपुर (विक्रम-पटना)-निवासी श्रीशिवशरणप्रसादसिंह से प्राप्त हुआ है।

१३३. ज्ञानस्वरोदय—ग्रंथकार—चरनदास। लिपिकार—गंगाप्रसाद। अवस्था—अच्छी, पूर्ण, देशी कागज। पृष्ठ-सं०—२२। प्र० पृ० पं० लगभग—३०। आकार—६½"×१०"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी (कैथी)। रचनाकाल—×। लिपिकाल— ४ माघ, मंगल, सन् १२५६ साल।

प्रारम्भ—"श्री गनेसाएनमहः श्री रामजीसहाए श्री महादेवजीसहाए श्री महावीरजी सहाए श्री पोथी ग्यान सरोदे

दोहा

नमो नमो सुखदेवाजी परनाम करो आनंद।
तुम परसाद सुर भेद को चरनदास बरनत ॥१॥
परसोतीम परमातमा पुरन वीस्वावीस्न।
आदी पुरुष अवीचलहुहीतेहो न पापी सरीर ॥
धरम अग सो कहत है अदर सो सोहग जान।
नीह अदर स्वासा रहे ताही को मन आनंद ॥
ताही को मन आन रातदीन सुरती लगायो।
आपहीआपवीचारी आपर नाही सीसनवायो ॥"

मध्य—(पृ० सं० ११)—"जय सीघे ससी लखें छुटे महीना काल।
आगे ना·· · करे वहटे गोल तत्काल ॥
ऊपर खैंचे आपना को प्रान आपना मीलाए।
उत्तीम करे समाघ सो ताको काल न खाए ॥"

अन्त—"बाल अवस्यामाह : मोरदीने मे आऊ रमतमीले सुखदेव।
नाम चरनदास··· ··
जोगजुगत हरीभजकरकर भग्यानदीठकरगही
आतम ततुवीचार अजपामे मन सुन हरो २६"
अती ग्यानसरोदे सुभक्रीत चरनदासजी समपुरन सुभमस्तु।

विषय—संत-साहित्य। श्वास और स्वर के आधार पर यौगिक साधनों का विवेचन।

टिप्पणी—स्वर-प्रक्रिया-विधि के अवबोधन के लिए रचित संत चरणदास की यह रचना पहले के विवरणों में भी आ चुकी है। दे० बि० रा० भा० प० से प्रकाशित 'प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण' (पहला खण्ड)—पृ० पृ० ११७, ११८, ११६ (ग्र० सं० ६६)। ग्रन्थकार के सम्बन्ध में श्रीरामनरेश त्रिपाठी ने कविता-कौमुदी में रचना-

अतफल होही तुरतही कथा पढ़े चीतलाए।
जमु तेही नीकट ने आवही चीमु न घर सो जाए॥
ऐतीश्रीमहाभारथचकाव्युह मे पुरन भेथा ममदोग्गनदीअते पंडीतजनसो धीनतीमोर टुटलआगर लेवजरजोर।"

विषय—महाभारत का भाषानुवाद।

टिप्पणी—ग्रथकार सबलसिंह चौहान महाभारत के प्रसिद्ध रूपान्तरकार हैं। ग्रन्थ में रचनाकाल का संकेत नहीं है। इसका रचनाकाल सं० १७२७ वि० के लगभग है। ग्रन्थकार इटावा के निकट किसी गाँव के जमीन्दार और जाति के चौहान क्षत्रिय थे। कहा जाता है कि इनके वंशज अभी तक हरदोई में वर्त्तमान हैं। इनके सम्बन्ध में श्रीरामनरेश त्रिपाठी ने कविता-कौमुदी (प्रथम भाग, नवनीत-प्रकाशन, बम्बई, आठवाँ संस्करण, पृ० सं० ४३३) में विस्तृत प्रकाश डाला है। इनकी रचना की पाण्डुलिपियाँ नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी को भी खोज में मिली हैं। द्र० ना० प्र० स०, का०, खो० वि० १९०४, प्र० स० ६६; खो० वि० १९०६—१९०८ प्र० स० २२४ पृ० और बी०, हस्तलिखित हिन्दी-ग्रन्थों का त्रयोदश त्रैवार्षिक विवरण (१९२६—२८) पृ० ८१। ग्रथ की लिपि अस्पष्ट और पुरानी कैथी है। यह ग्रन्थ, प्रतीत होता है, ग्रन्थकार के बृहत् ग्रन्थ का अंशमात्र है।

यह ग्रन्थ बख्तियारपुर, विक्रम (पटना) निवासी श्रीशिवरत्नप्रसादसिंह से प्राप्त हुआ है।

१३५. प्रेममूला और भक्तिहेतु—ग्रन्थकार—दरियादास। लिपिकार—लोकराजदास और बिजुलीदास। अवस्था—अच्छी। पृ० सं० ३७। प्र० पृ० स० लगभग—१७। आकार—६"×६"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—स० १६६६ वि०।

प्रारम्भ—"ग्रन्थ प्रेममूला भाग्रल दरीश्रा साहब नामनीसान सत्रसुक्तिसाहब
प्रेमकवल जलभीतरे प्रेमनपर लेवास।
होतप्रात सुपट खुले मानातेज प्रगास॥
मयरपुहुपमे वासा कीन्हा। अंघ सुगंध प्रेम रस लीन्हा॥
जो जन प्रेम नाम वसी भेठ। सतगुर अन सूधार सपंठ॥"

मध्य (पृ० सं० १२)—"सतगुरगुरगुरनाहिपहचाना। नहिसत सेवा लपटाना॥
नाहिटाआदरदर्दीलआनाना। अघातमर्नाहि पहचाना॥"

अन्त—"मनपवन का साधीऔ साधो सब्दहिसार।
मूल अक्षमे गमीकरो मोतीघनापसार॥
ग्रन्थ समपुर्ण॥"

विषय— सद्गुरुभक्ति-प्रतिपादन, साधु-असाधु-चर्चा, स्त्री-सपत्ति-लोभ-त्याग, आत्मा की अमरपुर-यात्रा का वर्णन आदि। दरियापथ के प्रवर्त्तक दरियादास-कृत निर्गुण-भक्तिकाव्य।

टिप्पणी—ग्रंथ की लिपि प्राचीन और अस्पष्ट है। यह ग्रन्थ डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री से प्राप्त हुआ है।

११६. रामरतनगीता—ग्रन्थकार—कुशलसिंह। लिपिकार—×। अवस्था—अच्छी, पुराना, देशी-कागज। पृ० सं०—५१। प्र० पृ० प० लगभग—१६। आकार—५¼"×६"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारम्भ—"श्री परमेसरजी सहाय श्री भवानीजीव सहाये श्री हनुमानजीव सहाये।
श्री पोथी रामरतन गीता।

श्री गुरुजीगुन के चरन मनावौं। कालीप्रसाद गोविंद गुन गावौं॥
श्री किसुन अरजुन रसबानी। गुरुप्रसाद कछु कहौ बखानी॥
एकसमै श्रीमाधो राइ। अरजुन संग मै पेठ धाइ॥
कुरछेत्रमै भारती कीन्हा। मनोरथपुनीमाय कीन्हा॥
हाथजोरि अरजुन मैंधाई। प्रथमाशिरो दैवामोवा॥"

मध्य (पृ० सं० २६)—"सुनु अरजुन मीरचमीतसाई। मजन भेद तोही कहौ बुझाई॥
अंगुरी रेख भजन की करई। अस गुन तेही मापती होई॥
मोतीमाला जो सुमीरै कोई। दस गुन जानु तेही फलहोई॥"

अन्त—"येहमाव रामै चौतलाई। तब राधा कछु कीन्ह गोसाई॥
तबकछुज्ञानकहीदेवामोपाया। रामरतनगीता तबगाया॥
यहीबीचीगुरुकहीबी भेद। संतैपुनीओमचतन भेद॥
गुरुदेवामी मोहोपर सुरी गीमर्मभम।
रामनामचीतलाऐके और न जानेकर्मम॥
येती श्री पोथी रामरतन गीतासंपुरन जोदेवामोवीलाममहोम न दीयने
पंडीतजन सार्वमती मोर दुरछ मछरहैव सबमोरी।"

विषय— राम-नाम-महिमा का वर्णन। मानव-जीवन की श्रेष्ठता और गुरुभक्ति का महत्व। अर्जुन और श्रीकृष्ण का प्रश्नोत्तर।

टिप्पणी—शाहाबाद जिला के निवासी कुशलसिंह इस ग्रन्थ के रचयिता हैं। सम्भवतः इनका सं० १६०७ वि० था। इनके सम्बन्ध की सूचना के लिए दे० बि० रा० भा० प० से प्रकाशित 'प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण' (पहला खण्ड) पृ० ६ (कवि सं० २६)। यह रचना काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा को भी खोज में मिली है। दे० खो० वि० १९३२-३४, ग्रं० सं० १२१ ना० वि० १९२६-२८, ग्रं० सं० २५४ ए० और बी०। यह ग्रन्थ अखितयारपुर (पटना)-निवासी श्रीशिवाकान्तप्रसादसिंह से प्राप्त हुआ है।

१३७. अर्जुनगीता—ग्रन्थकार—जनभुवालस्वामी। लिपिकार- ×। अवस्था—अच्छी, पूर्ण। पृ० सं०—७८। प्र० पृ० प० लगभग—४०। आकार—५½"×६"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—१७०० वि०। लिपिकाल—×।

प्रारम्भ—"श्री गनेसजीवसहाऐ। श्री रामजीवसहाऐ। श्री हनुमानजीवसहाऐ। श्री भवानीजीव सहाऐ। श्री पोथी आरजुन गीता।

वदौ आदी अलख करनारा। सुमीरत नाम होऐ नीसतारा॥
सुमीरौ गुरु गोवींद के पाउ। अगम अपार है जाकर नाउ॥
करनुमे तुम अतरजामी। भगतीभाव हेतु गरगामी॥
दीन दीआल तुम वालक धाई। आपन जनप्र होहु सहाई॥
क्रीपा करहु तुम सारग पानी। श्रीमल अछर कहो वखानी॥
क्रीपा करहु जगदीस वर वीनती सुनहु चीतमोर।
भगती भाव देहू स्वामी कहे भुआल करजोर॥
सम देवन वरनो चीतलाइ। अछर अछर कहहु वनाई॥
सारद सरसती आदी भवानी। श्रीमल अछर कहहु वखानी॥
मम वीनती सुनो पुरुख पुराना। जुगेस्वर तोही रूप वखाना॥
अछर सुमक रही समदेवा। महादेव देवन्हके देवा॥
कथा अजर अगम है सुनु स्वामी चीतलाऐ।
गीता ग्यान प्रगासहू कहही भुआल सीरनाऐ॥"

मध्य (पृ० सं० ४०)—

"तुह त्रीलोक के ठाकुर सामी कहहु मोही पार।
श्रीमल वुधी होऐ जाहीते सोइ कहहु सुरनार॥
अव सुनु मै कहो वेमूती। लोकन स्यापीत रहै जौनीती॥
चौसुनकथा सुनावौ तोही। चाँद सुरज देखावहु अव मोही॥"

अन्त—"सव सत्र कर मता जो लीन्हा। ताहीनी चोरी के गीता कीन्हा॥
जस देवसजोगओ भाखा। गुप्त अरथ कछुवो गोइन राखा॥
आरजुन सो कहै गोवींदा। छुटेउमोह होऐ सदेहा॥
मनसा वाचा कर्मना तीनी सुहजो आही।
सुनते कथा पापकी नासै सत कहा सुनुतोही॥

ऐतीस्त्रीभागवंतगीतासपुरनीरव असतुतीप्रभावीदयाजोगसासत्र श्रीहरसन आरजुन-संमादमोछनोनामजोगवनाम अठारहमो अध्याऐ १८॥"

विषय—गीता के आदर्श और विषय का अवलवन कर स्वतन्त्र दार्शनिक मत का प्रतिपादन।

टिप्पणी—ग्रन्थकार का रचनाकाल मिश्रबन्धुओं के अनुसार १००० वि० है, [दे० मिश्रबन्धु-विनोद, गंगा-ग्रन्थागार, लखनऊ, स० २०१३ वि० में प्रकाशित

१३६. भरथ-विलाप—ग्रंथकार—तुलसीदास (?)। लिपिकार—तवफल सिंह। अवस्था—अच्छी। पृष्ठ-सं०—७। प्र० पृ० पं० लगभग—२०। आकार—६"×६"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचना-काल—×। लिपिकाल—१८५७ वि०।

प्रारम्भ—"श्रीगनेमाऐनम श्रीगगाजीवसहाऐ श्रीभवानीजीवसहाऐ श्रीपोथीभरथबीलाप

पाशावध केकइ कीन्हा, दशरथ राजा हरग्र मैदीन्हा।
मांगतु केकइ जो मनकाजु, देव मैवर वचन अस आजु॥
जो राजा वर देतु मोही, जे मांगहु मैं देव सब तोही।
जो तोही हीरदे है मन साजु, सो अब आजु देव तोही आजु॥"

मध्य (पृ० सं० ५)—

"रामचन्द्र सो आऐ सुपाइ, लछुमन गए भरथ के ठाइ।
रोवत भरथ तैं अकम लाइ, भले बीसारे तु लखन भाइ॥
मीली के गए रामजी के ठाइ, देखत चरन परे दहराइ।
राम उठाइके अकम लावा, दुनो नैन नीर भरी आवा॥"

अन्त—"नग्र के लोग धाइके आइ। राम के कुसल पुछे मन लाइ॥
कुसल रामके सभैं सुनावा। तब चरन रोपी के नाथ पटावा॥
चरनोदक ले हीरदे लगावा। पुजा करैं पौ आनन लाइ॥
नीस्चे वचन कही समुझाइ। बाढै धरम पाप छै जाइ॥
भरथबीलाप सपुरन भैउ। तुलसीदास के चील स्नगैठ॥
इतिस्री पोथी भरथबीलाप सपुरन जोदेखासोलीखा ममदोखन दीअते"

विषय—कैकेयी द्वारा दशरथ से राम-वन-गमन की वर-याचना, भरत का अयोध्या प्रत्यागमन; सब समाचार सुनना, मूर्च्छा, विलाप और पिता दशरथ की दाह-क्रिया; राम-भरत-मिलन; चरणपादुका लेकर लौटना, अयोध्यानिवासियों को राम के समाचार को कह सुनाना तथा पादुका की पूजा।

टिप्पणी—प्रसिद्ध रामचरित-मानस-प्रणेता तुलसीदास से भिन्न कोई अन्य तुलसीदास इसके ग्रन्थकार हैं या गोस्वामी तुलसीदास, यह सर्वथा संदिग्ध है। लिपि प्राचीन और अस्पष्ट है; ग्रन्थ पूर्ण है। यह ग्रन्थ अख्तियारपुर, विक्रम (पटना)-निवासी श्रीशिवरत्नप्रसादसिंह से प्राप्त हुआ है।

१४०. वैद्यक-ग्रन्थ—ग्रन्थकार—×। लिपिकार—×। अवस्था—खण्डित, पुराना, देशी कागज। पृष्ठ-स०—१४। प्र० पृ० प० लगभग—२६। आकार—६"×६½"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारम्भ—"अथ अगतुकज्वरचिकित्सा दोहा

बवनविरेचनरक्तक्रिवचलदलजलवृत्तकीन।
तौरधष्ट अनेकविधलंत्रमत्रज्वरछीन॥१२॥

मध्य (पृ० सं० २२)—

चोपाई—"सहज अस लग जेतिक भाषा। ते सब रचना प्रले तर राषा॥
ईहाँ लग प्रले के प्रघाता। आगे अर्घ लोक अस्थाना॥
सहज पुर्स ते आगे जाई। आद पुर्स को लोक दिषाई॥
सहज ते ऐक असेष प्रवाना। तहावा आदपुर्स निरवाना॥"

अन्त—"सापो सिंघ समानो बुंद मे बुंद हो सिंघ समान। सिंध बुंद ऐके भयो बहुरन आवा जांन॥
अगम ग्यान भ्रदनेत मत। आद रूप विग्यान।
है सुकृत निरगुण कथा। तुमसो कहों बखान॥
ऐते श्री ग्रथपचमुद्रा कबीर धर्मदाससवादे भक्त जोग ग्यान ग्रनसार सपूर्ण समापत। सुभमस्तु॥"

टिप्पणी—सुकृत और जोगजीत के कथोपकथन के रूप में रचित यह कृति कबीर की है, यह संदिग्ध है। इसमें यौगिक क्रियाओं तथा तत्सम्बन्धी विभिन्न मुद्राओं का विशद विवेचन है। कबीर की अद्यावधि उपलब्ध कृतियों में इसके पूर्व इसका उल्लेख कदाचित् नहीं हुआ है। ग्रन्थ की लिपि प्राचीन है। यह ग्रन्थ मलाही (चंपारन)-निवासी श्रीघनारसीप्रसाद से प्राप्त हुआ है।

१४२ कोक-मुकुंदी—ग्रंथकार—मुकुंददास। लिपिकार—×। अवस्था—खंडित, हाथ का बना देशी कागज। पृ० सं० २७। प्र० पृ० पं० लगभग—१२। आकार—$६\frac{१}{२}" \times ६\frac{१}{८}"$। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारम्भ—"श्री रामचद्रजी। श्री पोथी कोक मुकुंदी। श्री गनेसाए नमह श्री सारदाजी सहाए श्री हनुमानजी सहाए श्री महादेवजी सहाए श्री तेतीस कोट देवताजी सहाए श्री····देवाएनमह श्री पोथी मुकुदी कोकसास्त्रकीत मुकुंददास।

चौपाई

काम तत मै कहो वीचारी। लछन पुरुख जाती है चारी॥
ससाश्रीगाश्रीखभतुरगा। पावही नर रस अधी सुरगा॥
पहीले कहो ससा कर लछन। काम कला रस रसीक विहछनछन॥
रतीरसरसीकतरुनीमन हरई। गावत पढ़त वीस्व वस करई॥

मध्य—(पृ० सं० १४) क्रीस्न पछ्छ के महीमा, कवि मुकुंद कह जानी।
दहीने उतरे नारी तनु, सभ धीधी कहो बखानी॥
माथे कुंतल गहे सुजाना। गाल नीत्र कर चुमन छाना॥
दसन अध्र धै धै रस लेई। मुस्टीका मारी रस रहे हरेई॥"

अन्त—"सम सुंदर गज गवमा पाई। कुच उर्वत रसीक मन लाई॥
गाढ सम चढु हीस मोती। करे अधप बहुत रंगाती॥
पीयप्रीतमप्रीतराखे जो प्रम कथा परवीन।
गावत बोवावत गुन करे तरुनी मन रस लीन॥

विषय—स्त्री-पुरुष के शुभाशुभ-लक्षण और कोक-शास्त्र-सम्मत औषधोपचार।

टिप्पणी—ग्रंथ खंडित है, अतः ग्रन्थकार अथवा लिपिकार के समय को संकेतित करनेवाली पुष्पिका-पंक्तियाँ नहीं हैं। काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के अनुसार सं० १६०२ के लगभग वर्तमान; शाहजादा सलीम (जहाँगीर) के आश्रित; दे० ना० प्र० स० का खो० वि० १९ ६–११ ग्रं० सं० १८३ ए० और बी० तथा मिश्रबंधु-विनोद (गंगा-ग्रंथागार लखनऊ, पंचम संस्करण, २०१२ वि०, पृ० ३३५, कवि सं० ३८२)। कवि की चर्चा काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा से प्रकाशित 'हस्तलिखित हिन्दी-ग्रन्थों का सोलहवाँ त्रैवार्षिक विवरण' (सन् १९३५–३७ ई०) में भी हुई है; दे० पृ० सं० ३३ और कवि-सं० १५। ग्रन्थ की लिपि अस्पष्ट और पुरानी कैथी है।

यह ग्रन्थ चकिसयारपुर, विक्रम (पटना)-निवासी श्रीशिवरामप्रसादसिंह के सौजन्य से प्राप्त हुआ है।

१४३. छप्पै रामायण—ग्रन्थकार—तुलसीदास। लिपिकार—रेवतलाल। अवस्था—पूरा पुराना कागज। पृ० सं०—१५। प्र० पृ० पं० लगभग—१८। आकार—८½″×५¼″। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचना-काल—×। लिपिकाल—माघ सुदी ५ रोज एतवार सन् १२५१ फसली=१९०१ वि०=१८४४ ई०।

प्रारम्भ—"श्री गनेस जी सेहाए
श्री गुरु चरन सरोज वंदी गननाथ मनाओ।
जेही प्रसाद राम होऐ नाथ सो कीजै सुभाओ॥
भारत हरन श्रीपाल नाम सुनी आगुन गाइ।
सुमीरत गाए सबाप सम सहाइ॥

छपै। श्रीपती रघुपती भगवती रानी जेहु सरन आपना।
श्री रामचंद्रजी कीपा करो मम हीऐ मोग समतापना॥
रही करीव सीमुखी समेत चंद्रजोत रूपसा।
गगन कहे सोधा न सुमीतइ पगोभीपगासा॥
म्राव गहे करपान दसी तापम मक मोचत।
पंछी सी मनमद सर्मीत पंक्ती हर सोचत॥'

मध्य (पृ० सं० ८) —

"सो सुनी पवन कुमार तब हरख भैमन आपना।
स्री रामचद्रजी क्रीपा करो मम हरीऐ सोग सतापना॥
उचकी उठे हनुमान कान सुनी बैन रीछे सो चलत
महाधुनी गर्ज डोल मही दीगज ससा॥
सुर सो वदन ममाऐ सींधु के पार सीधावहु।
प्रभु प्रताप जल जान पार सागर होऐ आऐ॥
मुस्टीकाहनी लकेस नीचले सुमारी प्रभु आपना।
स्री रामचद्र जी क्रीपा करो मम हरीऐ सोग संतापना॥"

अन्त—"बीदा कीए सम सखही प्रभु जब जाये ग्रीह आपना।
स्रीरामचन्द्र जी क्रीपाकरो मम हरीऐ सोग सतापना॥
रामचरीत्र औ गाहृ सीधु कोउ पार न पावौं।
सेस न सारघ नीगमनेती कही नीज मुख गावौं॥
सम्भु उमा संवाद भारद्वाज जागवलीक मुनी।
काग भुसुंडी से मुनी.. ..तुलसी मानस गुनी॥ छपै ४६

इतश्री तुलसी पुकार असतुती सपुरन जो देखा सो लीखा मम दोखन न दीअते पढीत जन सो वीनती मोरी टुटल अछर ले सम जोरी सं० ६१२ साल समे नाम मीती माव सुदी ५ रोज ऐतवार के तेआर भेल।

विषय—रामचन्द्र के जीवन से सम्बद्ध घटनाओं पर अवलंबित भक्तिरसपूर्ण स्तुतियाँ।

टिप्पणी—गोस्वामी तुलसीदास-रचित छप्पय छंद में रामायण का वर्णन। इस ग्रन्थ की अन्य पाण्डुलिपि काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा तथा वि०रा०भा०प० को खोज में मिली है, ना०प्र०स० (का०) के खोज-विवरणस्य का लिपिकाल १६२८ वि० = १८७१ ई०। दे० ना०प्र०स० (का०) खो०वि० १६०६–८, स० २४५ एच् और बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् से मन्नूलाल पुस्तकालय (गया) के ग्रथों का प्रकाशित विवरण (दूसरा खंड), पृ० २३ और प्र० सं० २०, इसका लिपिकाल १६१६ वि० = १८६२ ई० है। यह प्रति उपर्युक्त दोनों पाण्डुलिपियों से प्राचीन है। ग्रथ की लिपि पुरानी अस्पष्ट और कैथी है। यह ग्रंथ श्रीरंगनाथ पुस्तकालय गोरखरी (विक्रम, पटना) से प्राप्त हुआ।

१४४. कृष्ण रामायण—ग्रथकार—घनारग। लिपिकार—बच्चू मल्लिक। अवस्था—पूर्ण और मुद्रित। पृ० स० १६७। प्र० पृ० पं० लगभग २४। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल— ×। ग्रन्थकार की जन्मतिथि—१८७६ वि० = १८१६ ई०। मृत्युतिथि—१६४४ वि० = १८८७ ई०। लिपिकाल— ×। मुद्रणकाल—१८६४ ई०। प्रकाशक—श्रीबच्चू मल्लिक (उपनाम—प्रकाश कवि)। मुद्रण-स्थान—हरिप्रकाश-यन्त्रालय, बनारस।

यह ग्रन्थ मुद्रित है। ग्रंथ की पुष्पिका में कवि ने अपना वंशोद्भव तथा पूर्वजों के स्थान-परिवर्त्तन पर प्रकाश डाला है। यह ग्रंथ मलिकजी के वंशज श्रीसहदेव दुबे (धनगाई, सूरजपुरा, शाहाबाद)-निवासी से प्राप्त हुआ है।

१४५. (क) निरभैग्यान—ग्रंथकार—दरियासाहब। लिपिकार—निर्मलदास। अवस्था—पूर्ण, पुराना, हाथ का बना कागज। पृ० सं०—१४। प्र० पृ० पं० लगभग—३२। आकार—७$\frac{1}{2}$"×५$\frac{1}{2}$"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—१९५६ वि०।

प्रारम्भ—"गर्थ नीरभैगान भागल दरीआ साहब हंस उवारन मुकुति के दाता वदी छोर। साखी—

आदी पुर्स कता है जीन्ह की सकल पसार।
प्रीथी नीरभ्र का सजत चाँद सुर्ज वीसतार॥
अर्ज ..... अम्र अयीनासी।
हंस उबारी काटही जमफासी॥"

मध्य (पृ० सं० ७)—

"वीनु मनी नाही भुजग की जाती।
वीनामनीनाही होऐ उजीआरा॥
और फिरै सवके... आ पारा।
जाके होए मुल मनीमाला।
सोइ सत है ग्रान रीसाला॥"

अन्त०—"जोगजुगनी गहे चीतलाई। ताको काल नीकटनाही आइ।
गहीरहोए गहे जो ग्याना। असल भेद करै प्रवाना॥
मोर साहुके करै वीनाई। सत्तसब्द गहै चीतलाई॥
सत्तगुरु सब्द प्रतीति करी गहो सतचीतलाए।
छपलोक के जाइहो बहुरी ना भौ जल पाए॥

ग्रयनीरभए ग्यान समपुरन भइल सन १३०७ साल, फागुन वदी चउथ वार एतवार : सम्वत १९५६।"

विषय—सत्पुरुष और शब्द में विश्वास की आवश्यकता, सत्पुरुष का गुणानुवाद, आत्मा पर सद्गुरु का शांतिप्रद और कल्याणकर प्रभाव।

टिप्पणी—लिपि पुरानी है। लिपिकार धनगाई (शाहाबाद) के दरियामठ के निवासी हैं। यह ग्रंथ श्रीसहदेव दुबे (धनगाई, सूरजपुरा, शाहाबाद) के सौजन्य से प्राप्त हुआ है।

भरथरवीक्रम महीप । दायाद्रुम कुल को दीप ॥
धन्दो तीरथराज प्रेयाग । मथुरा अवध अति अनुराग ॥"

अन्त—"गुरुगमपय शुक्रीत है मुल । आगम अमर पावन फुल ॥
शतगुरु दयाकरीको दीन्ह । आपन पुरुर लीजै चीन्ह ॥
दुशार कुल दुर्मति दन्द । शाहेयमीले आनंन्दकन्द ॥
मागत मानमवत दान । दीजे भक्ती कीपानीधान ॥"

विषय—निर्गुण-साहित्य । भक्त कवियों की नामावली ।

टिप्पणी—यह ग्रन्थकार नवोपलब्ध हैं । ग्रन्थ के प्रारम्भ या अन्त में ग्रंथ-रचना-काल का सकेत नहीं है । ग्रंथ की लिपि प्राचीन देवनागरी है । यह ग्रथ मुजफ्फरपुर-निवासी श्रीपन्नालाल 'आर्य' के सौजन्य से प्राप्त हुआ है ।

१४६. छप्पैप्रस्ताव—ग्रथकार—नरहर । लिपिकार—लक्ष्मीनारायण । अवस्था—पूर्ण, देशी कागज । पृ० सं०—८ । प्र० पृ० पं० लगभग—२२ । आकार—८½"×४½" । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

प्रारम्भ—"श्री गणेशायनमः । पोथी छप्पै प्रस्ताव ।
तीलकभाल घनमाल अधीक राजत श्यामछवी ।
मोर मुकुटकेलटकघटकजरनत भंटकतकवी ॥
पीतामर फहरात मधुर मुसकान कपोलन ।
रचे दरचीरमुखपान तान गावत मीदुबोलन ॥
रतीकाम शोभा नीरखी दुरट नीकदन गोरचरन ।
आनंन्दकंन्दचीजचन्द प्रभु जैजैजै अशरनशरन ॥"

मध्य (पृ० सं० ४)—
"जदपी कुरंग गगलाभ तदपि वोह राग ना कीजै ।
जदपि धनीक होए नीरधन तदपि अकीतनहि लीजै ॥
जदपी दान नहि शुक्रीत तदपी शनमाननाखुदीऐ ।
जदपी प्रीति उर घटै तदपि मुख ढलटी ना दुटीऐ ॥
शुनिशुजश दुवार सेवार दे कुजशमाल नहि मुक्कीऐ ।
जीवजाइ जों भलपन करत तउ ना भलपन चुक्कीऐ ॥"

अन्त—"शरशरहस न होत वाजी गज होत ना दर दर ।
तरु तरु सुफल ना होत नारी पतिव्रता न घर घर ॥
तन तन शुमती न होही मोती जल बुन्द न घन घन ।
फनी फनी मनी नही होत शर्प मलेआ नही वन वन ॥
कहु रन होही ना शुर शभ नर नर होत ना भक्त हर ।
नरहरकवी शो वीचारकही शभनर होही ना एक शर ॥"
इती छप्पेप्रस्ताव शम्पुंरन ॥"

प्रथम परिशिष्ट

अज्ञात रचनाकारों की कृतियाँ

(ग्रन्थों के सामने कोष्ठकों में अंकित संख्याएँ विवरणान्तर्गत क्रम-संख्याएँ हैं)

क्रम-संख्या	ग्रन्थों के नाम	विषय	रचनाकाल	लिपिकाल	विशेष
१	नागलीला (१०८)	कृष्ण-जीवन-सम्बन्धी रचना		१९०५ वि०	
२	बन्दीमोचन (११०)	पुत्र-प्राप्ति के लिए वन्दना		१८२७ वि० = १८४० ई०	
३	आयुर्वेद-सम्बन्धी ग्रन्थ (११६)	पारा आदि शोधने की विधि			
४	वनयात्रा (१२०)	मथुरा के विभिन्न स्थानों के वर्णन			
५.	वैद्यक ग्रन्थ (१४०)	रोग-लक्षण और रोगोपचार का आयुर्वेदविषयक ग्रन्थ			

द्वितीय परिशिष्ट

ग्रन्थों की अनुक्रमणिका

[ग्रन्थो के सामने की संख्याएँ विवरणिका में दी गई क्रम-सख्याएँ है]

ग्रन्थकारों की अनुक्रमणिका

[ग्रन्थकारों के सामने की संख्याएँ विवरणिका में दी गई ग्रन्थ संख्या की क्रम-संख्याएँ हैं]

●

तृतीय परिशिष्ट

महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों के समय तथा अन्य प्रकाशित खोज-विवरणिकाओं में उनके उल्लेख का विवरण

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	रचनाकाल	प्राप्त ग्रन्थों के लिपिकाल तथा खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थसंख्या: लिपिकाल	खो० वि० प्र०	ग्रन्थसंख्या	विशेष
१.	कबीरदास	१ पंचमुद्र		१७४७ वि०	ना० प्र० स० का० १६३५—३७	४६ एस्	
				१६२८ ,,	बि० रा० भा० प० ३ ख०१६०५	१४१	
२.	कृपाराम	१ भागवत भाषा	१८१५ वि० ?	१८७६ ,	ना० प्र० स० का०	६	
					,, ,, १६०६—८	१५५	
				१६५० ,	बि० रा० भा० प० १ ख०	८५	
				१६५० ,,	,, ,,	११५	
३.	चरनदास	१ ज्ञानस्वरोदय	१७६० वि० ?	१८३३ ,,	ना० प्र० स० का० १६०१	७०	
				१८१५ ,,	,, ,, १६०३	१३५	
					,, ,, १६०६—८	१४७ ई	
					,, ,, १६१७ – १६	३८ ए	
					,, ,, १६२०—२२	२६ बी	
					,, ,, १६२३ २५	७४	
					,, , १६२६ – २८	७८ ओ	
				१६१८ ,,	,, ,, १६२६—३१	६५ डब्ल्यू, एक्स, वाई, जेड्	
				१८७७ ,,	बि० रा० भा० प० १खं०, १६५८	६६	
				१८७७ ,,	,, ३ ,,	११४	
				१२५६ फ० = १६०६ वि०	,, ३ ,,	१३३	
४.	तुलसीदास	१ रामचरितमानस		१६४७ वि०	ना० प्र० स० का० १६००	१	
				१६०४ ,,	,, १६०१	२२	
				१६७४ ,,	,, १६०१	२८	

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	रचनाकाल	प्राप्त ग्रन्थों के लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थसंख्या			विशेष
				लिपिकाल	खो० वि० ग्र०	ग्र० सं०	
४	तुलसीदास	१ रामचरितमानस		१७१७ वि०	ना०प्र०स० का० १९०२	१९७, १९८, १९९	
				१८२८ ,,	,, ,, ,, १९०४	१४४	
				१९०४ ,,	,, ,, १९२०-२२	१९८ ए	
					,, ,, ,, १९२३-२५	४११	
					,, ,, १९२६-२८	४८२ए से ई तक, १२५ए से ई और १२५एए से भी २ तक	अर्थात् कुल ४१ पाण्डु लिपियाँ
				१९११ ,,			
				१८७८ ,,			
				१८७६ ,,			
				१७६ ,,			
				१८५१ ,,			
				१७६० ,,			
				१८८१ ,,			
				१८८७ ,,			
				१९०४ ,,			
				१८९२ ,,			
				१९०२ ,,			
				१७९० ,,			
				१८७२ ,,			
				१८८८ ,,			
				१९१२ ,,			
				१९२२ ,,	मि०ए०मा० प० १ सं०	२	
				१८४७ ,,	,,	१	
				१८८२ ,,	,,	७	

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	रचनाकाल	प्राप्त ग्रन्थों के लिपिकाल तथा खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या			विशेष
				लिपिकाल	खो० वि० ग्र०	ग्र० स०	
४.	तुलसीदास			१८५६ वि०	वि० रा० भा० प० १ खं०	५	
				१८६४ ,,	,, ,,	१८	
				१८३६ ,	,, ,,	४१	
				१९०९ ,,	,, ,,	९९	
				१८८७ ई०	,, ३ खं०	१०४	
		१ रामचरितमानस		१८७१ वि०	,, ,,	१२१	
					,, ,,	११८	
					,, ,,	१२७	
				१८५८ वि०	,, ,,	१२९	
				१२६७फ़० = १९१७ वि०	,, ,,	१३०	
		२ भरथमिलाप			,, ,,	१३८	
					ना० प्र० स०, का०	४८५ ए	
				१८८८ वि०	वि० रा० भा० प० २ ख०	४८	
				१९०७ ई०	,, ३ खं०	१०७	
				१८५७ वि०	,, ,,	१३९	
		३ छप्पै रामायण		१८७१ ,,	ना० प्र० स० का० १९०६–८	२४५ एच्	
		४ कवितावली (कवित्त रामायण)			वि० रा० भा० प० २ ख०	१९,२०	
				१९९९ ,,	ना० प्र० स० का० १९०३	१२५	
				१८५९ ,,	,, १९२०-२२	१९८ एफ्	
					,, १९२३-२५	४३२	
					,, १९२६-२८	४८२ ई, एफ्	
					,, १९२९-३१	३२५ आर २	
				१९१९ ,	वि० रा० भा० प० २ ख०	१३	
				१८९४ ,,	,, ,,	१२७	
				१९४० ,,	,, ३ खं०	१५०	

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	रचनाकाल	प्राप्त ग्रन्थों के लिपिकाल तथा खोज विवरणान्तर्गत ग्रन्थसंख्या — लिपिकाल	खो० वि० ग्र०	ग्रन्थसंख्या	विशेष
					त्रि० रा० भा० प० १ ख०	९२	
					३ ख०	११२	
७.	परमानन्ददास	१ बारहमासा	१८५५ वि०	१९४१ ई०	,, ,,	२३	
				१२७७ फ० = १९२७वि०	ना० प्र० स० काशी १९०१	१४२	
८.	सूरदास	१ सूरसागर		१८५३ वि०	१९०४	२४४ सी	
				१७९२ वि०	,, ,, १९०६–८	४७१ एम्, एन्	
				१८७३ वि०	, ,, १९२६–२८	४३	
				१८६६वि०=१८२७ वि०	,, ,, त्रि० रा० भा० प० १ खं०	३९	
				१८२५ वि०	२ ख०	८०	
				१९१३ वि०	,, ,,	११३	
				१९२४ वि०	,, ३ ख०	४७३ बी	
					,, ना० प्र० स० का० १९२६–२८	४५ रु	
९.	सूरजदास	१ रामजन्म		१९०९ वि० = १८५२ ई०	त्रि० रा० भा० प० १ खं०	४७	
				१९३७ वि०	२ ख०	१०५	
				१९८८ वि०	, ३ ख०	१०४	
					, ना० प्र० स० का० १९०९–११	१६३	
					१९२६–२८	२५	
१०.	हलधरदास	१ सुदामाचरित		१९११ वि०	,, ,, त्रि० रा० भा० प० २ ख०		
				१८०० वि०			